• वर्ष 49 • अंक 06 • जून 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 06 ● जून 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
16. पहेलियां
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
40. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

7. महान कौन?
: अमृत 'हरमन'

17. दो बाल कविताएं
: महेन्द्र सिंह शेखावत

25. सूरज ने खूब रौब जमाया
: सुमेश निषाद

25. लू ने कैसी धूम मचाई
: राजेन्द्र निशेश

33. आम रसीला
: अशोक 'आनन'

33. पपीता स्वादिष्ट ...
: देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

39. बया पंछी
: उदय मेघवाल

39. कोयल
: श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

47. आसमान में निकले तारे
: गोपेन्द्र सिन्हा

47. गाँव का किसान
: राजेश निषाद

कहानियां

8. दयालु बालक
: जगदीश कौशिक

9. दुष्टों का साथ ...
: कमल जैन

18. जैसा को तैसा
: नेहा गाबा

18. वीर बालक दूधा
: श्यामसुन्दर गर्ग

20. लिंकन का दृढ़ संकल्प
: नेहा नागपाल

22. लालच का फल
: दीपांशु जैन

30. बुरी आदतों का परिणाम
: राजकुमार जैन 'राजन'

41. माँ की सीख
: जितेन्द्र मिश्र

विशेष/लेख

10. क्या आपको ज्ञात है?
: उदय ठाकुर

20. गुणकारी आम
: मीना

27. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

28. नेटरजैक टोड
: परशुराम शुक्ल

43. सीमेण्ट की जन्मकथा
: दिनेश दर्पण

46. कबूतर को कैसे होता ...
: डॉ. विनोद गुप्ता

कृतज्ञ बनें

सभी माता-पिता अपने बच्चों को स्वस्थ, प्रतिभाशाली, अग्रणी, उत्तम चरित्र के मालिक एवं सबसे अच्छा ही देखना चाहते हैं। लगभग सभी माता-पिता यही चाहते हैं कि उनकी सन्तान अपने माता-पिता से भी आगे बढ़े और उनको गौरवान्वित करे। इसके लिए वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाने की भरपूर कोशिश करते हैं।

बच्चा जब पहली बार स्कूल से घर वापस आता है और वह अपनी टूटी-फूटी, तोतली भाषा में माँ को कुछ भी कहता है अथवा बताता है तो माँ बहुत खुश होती है।

पहले माता-पिता की प्रसन्नता अपने तक सी. मित होती है। जब बच्चा किसी भी क्षेत्र में चाहे वह खेल हो, चित्रकारी हो, संवाद प्रतियोगिता हो या किसी भी स्तर पर भाग लेता है तो वह अपने स्कूल या कॉलेज का प्रतिनिधित्व कर रहा होता है और उसमें पुरस्कृत होते ही वह खुशी पूरे स्कूल, विद्यालय, मित्र, माता-पिता एवं समाज से जुड़ जाती है।

इसी प्रकार राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए एक समय ऐसा भी आता है कि वह देश का प्रतिनिधित्व करके देश को भी गर्व और सम्मान दिलवाता है। उस समय वह स्वयं एवं पूरा देश उसकी खुशी का भागीदार बन जाता है। ऐसे समय में माता-पिता एक दैवी सुख एवं आत्म-सन्तुष्टि का अनुभव भी करते हैं।

साथियों! ऐसा भी देखा गया है कि व्यक्ति इतनी ऊँचाई पर पहुँचकर जब अपने अनुभव सबको सुनाता है, तब वह स्वयं ही अपनी बड़ाई करता है कि मैं तो बचपन से ही बड़ा मेहनती था, बड़ी मुश्किलों एवं कठिनाईयों के बावजूद मैंने शिक्षा ग्रहण की, साथ-साथ काम भी किया इत्यादि। मैं अपने प्रयासों से ही आगे बढ़ा हूँ। इस तरह उसके संवाद में स्वाभिमान नहीं बल्कि अहंकार झलक रहा होता है परन्तु कुछ ऐसे भी महान व्यक्ति होते हैं जो ऊँचाई पर, प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उपरान्त अपने सम्मान का श्रेय अपने माता-पिता, मित्रजनों एवं गुरुजनों को देते हैं और उनका आभार व्यक्त करते हैं।

प्यारे साथियों! अब हमें अभी से ही सीखना है कि हमें किस मार्ग को चुनना है, साथ में यह भी विचार करें कि क्या मैं अकेले ही अपने सारे कार्य कर सकता हूँ, क्या मैं बिना सहायता के कुछ भी कर सकता हूँ? अगर मुझे कोई चलना, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना नहीं सिखाता तो मेरा जीवन कैसा होता? इसलिए हम उन सभी का जिन्होंने हमारे जीवन के किसी भी क्षेत्र में, किसी भी समय में, किसी भी प्रकार की छोटी या बड़ी सहायता की हो उनका आभार करना कभी न भूलें और सबके सामने स्पष्टतः उनकी प्रशंसा एवं आभार अवश्य ही व्यक्त करें। इससे हम छोटे नहीं होंगे बल्कि सबकी नजरों में और भी बड़े हो जाएंगे। फिर माता-पिता, परिवारजनों, मित्रजनों एवं गुरुजनों का तो कहना ही क्या, वे तो आशीर्वाद से भरपूर कर आपको दैवी आनन्द से परिपूर्ण कर देंगे।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 252

ज्ञान दे बाझों कर्म कमाणे मालक बाझ मजूरी ए।
मंज़िल तों उल्टे जे चलिये वधदी जान्दी दूरी ए।
रोटी रोटी सिमरदे जाणा भुख विच वाधा करना ए।
ऐवें घड़ के यार ख्याली विच बिरहा दे मरना ए।
नैणां नाल जे पीअ ना डिट्ठा करना प्यार खुवारी ए।
कहे अवतार सिरफ़ इक मुरशद दसदा सूरत प्यारी ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ज्ञान प्राप्त किए बिना कर्म करना समय व्यर्थ करना है। यह मंजिल से दूर ले जाने वाली यात्रा के समान है। मंजिल से उल्टी दिशा में जितना चलते जाते हैं उतना ही हम मंजिल से दूर होते जाते हैं। मंजिल की दिशा के विपरीत दिशा में बढ़ाया गया हर कदम मंजिल से दूर ही ले जाता है। इसी तरह अगर रोटी का केवल सुमिरण किया जाए रोटी खाई न जाए तो यह भूख मिटाने की जगह भूख को और बढ़ा देती है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जो भी कर्म किया जाए उसका ज्ञान होना जरूरी है। इन्सान अगर ख्यालों में ही परमात्मा की कल्पित मूर्ति बनाकर अपने प्रभु-प्रियतम का प्यार पाना चाहे तो ऐसा होना सम्भव नहीं है, उल्टे इससे विरह की वेदना और बढ़ती चली जाएगी। प्रियतम प्रभु से मिलने की इच्छा रखने वाले को काल्पनिक परमात्मा नहीं चाहिए, उसे वास्तविक परमात्मा की प्राप्ति से ही आनंद की प्राप्ति हो सकती है। परमात्मा के खुली आँखों से दर्शन करना ब्रह्मज्ञानी भक्त के लिए सहज ही सम्भव होता है। संसार के लोग इसे जितना कठिन बताते हैं गुरु की कृपा होने से यह उतना ही आसान हो जाता है। गुरु कृपा के फलस्वरूप इन्सान अगर अपनी आँखों से परमात्मा के दर्शन करता है तो उसे अद्भुत खुशी प्राप्त होती है लेकिन अगर परमात्मा को आँखों से देखा ही न हो तो प्रभु के प्रति काल्पनिक प्यार परेशानी ही बढ़ाता है, ऐसा प्यार खुशी नहीं देता।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में केवल मुरशद ही परमात्मा की सच्ची और प्यारी मूरत के दर्शन कराता है। परमात्मा को जानना और इसकी कृपा का पात्र बनना सच्ची राह दिखाने वाले मुरशद की रहमत से सम्भव होता है।

बाबा अवतार सिंह जी अनेक प्रकार से उदाहरण देकर यही समझाना चाह रहे हैं कि पहले इन्सान परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करे फिर ज्ञान के अनुसार कर्म करके अपना जीवन सार्थक करे अन्यथा परमात्मा की याद में इसकी विरह वेदना बढ़ती ही जाएगी और पूरा जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ एक व्यक्ति के स्वभाव में भी अनेक पहलू होते हैं। हो सकता है हमें एक पहलू अच्छा लगे और दूसरा पहलू नहीं। ज्ञान और विवेक की दृष्टि रखने वाले गुणों पर केंद्रित रहते हैं और वे दूसरों की कमियों को नहीं देखते।

❖ हमें अपने मन को निरंकार द्वारा बक्शे ज्ञान, विवेक और चेतनता के सांचे में ढालना है जिससे हमारा चुनाव सही दिशा प्राप्त कर सके। हम सभी ने दिल से सेवा, सुमिरण करना है। सत्संग रूपी माँ की गोद में भक्ति के आनंद को प्राप्त करना है। अपने दिल को बड़ा करते हुए दूसरों की गलतियों को नजरंदाज और क्षमा करते हुए हमने सभी के साथ आदर और सत्कार से रहना है।

❖ अगर किसी को जीवन में प्यार और स्नेह नहीं मिला तो उस भाव से दूसरों को प्यार बांटे जैसा उसने स्वयं के लिए चाहा था और अगर जीवन में प्यार और मिलवर्तन प्राप्त किया है तो उसी अनुभव को दूसरों के साथ और बढ़-चढ़कर साझा किया जाए।

– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ जंग कभी अच्छी नहीं होती, शान्ति कभी बुरी नहीं होती।

❖ सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि बल का सूचक है।

❖ निराकार-प्रभु से नाता जोड़ो, इसी से सभी सुख प्राप्त होते हैं।

❖ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

– निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

❖ मिलकर चलो, मिलकर बोलो और मनों से सही दिशा में सोचो। – ऋग्वेद

❖ खाने और सोने का नाम ही जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने की लगन का। – प्रेमचन्द

❖ राजा का आदर केवल अपने राज्य से ही होता है किन्तु विद्वान का सम्मान सब जगह होता है। – चाणक्य

❖ मास्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है। जितनी शरीर के लिए व्यायाम की। – थॉमस एडीसन

❖ थोड़ा पढ़ना, ज्यादा सोचना, कम बोलना, ज्यादा सुनना यही बुद्धिमान बनने के उपाय हैं। – रविन्द्रनाथ टैगोर

❖ स्वतंत्रता और शक्ति जिम्मेदारी लाती है।

❖ आदमी का व्यक्तित्व उसकी अपनी कमाई है। – जवाहरलाल नेहरु

संकलन : श्रीराम प्रजापति

कविता : अमृत 'हरमन'

महान कौन ?

इक दिन बोला मानव सूरज से,
तुम कितने महान हो।
सबको रोशनी ऊर्जा देते,
इस सृष्टि के प्राण हो।
एक कमी है लेकिन तुम में,
गर्म बहुत हो जाते हो।
गर्मी के मौसम में पसीने,
से सबको नहलाते हो।

फिर बोला मानव सागर से,
तुम कितने महान हो।
बादल भी जल लेते तुमसे,
विशाल हो जल की खान हो।
लेकिन एक कमी है तुम में,
बाकी तो गुण हैं सारे।
जल तुम्हारा पी नहीं सकते,
तुम तो हो बिल्कुल खारे।

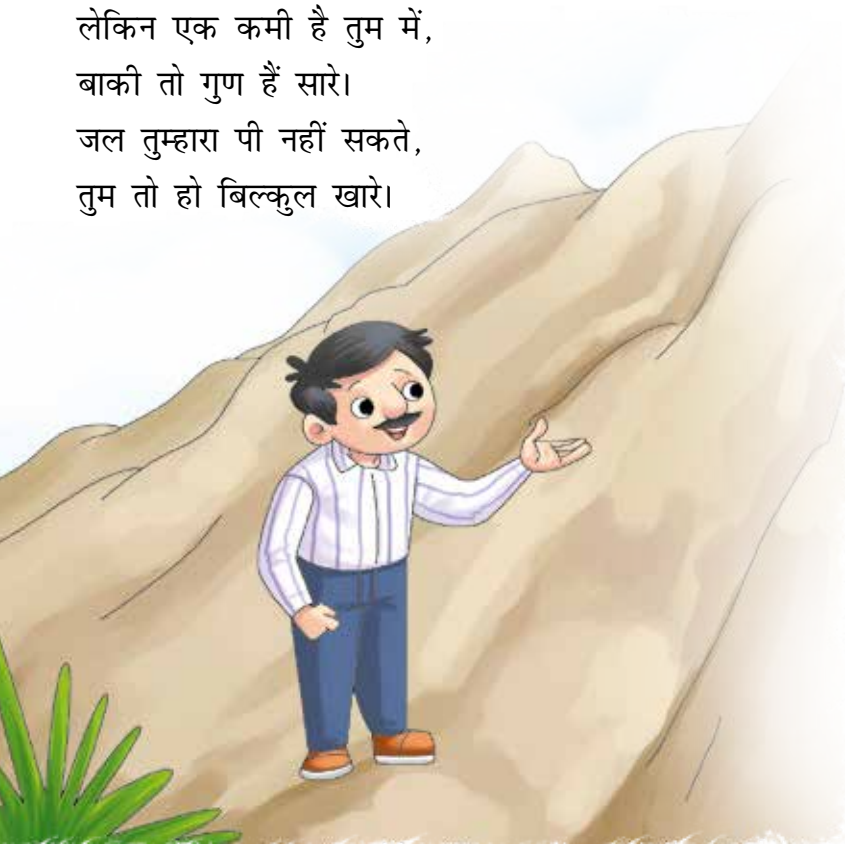

फिर बोला मानव हिमालय से,
तुम तो बड़े महान हो।
अचल, अडोल, विशाल हो कितने,
धरा के मुकुट समान हो।
हाँ बस एक कमी है तुम में,
बर्फ से सारे ढके हो तुम।
कोई पेड़ न पौधा उगता,
बेजान से बिल्कुल पड़े हो तुम।

फिर तीनों बोले मानव से,
हम तो जड़ हैं निष्प्राण हैं।
जिसके लिए प्रभु ने बनाया,
बस करते वो काम हैं।
तुम ही सृष्टि में श्रेष्ठ हो सबसे,
तुम प्रभु की संतान हो।
अवगुण देखना छोड़ दो गर तो,
सब से तुम ही महान हो।

प्रेरक-प्रसंग : जगदीश कौशिक

दयालु बालक

घटना अट्ठारहवीं शताब्दी की है। एक बालक अपनी बहन इलायजा के साथ सुबह सड़क पर सैर कर रहा था। एक लड़की फलों की टोकरी सिर पर रखे फल बेचने जा रही थी। इलायजा अपनी मस्ती में इधर-उधर दौड़ते हुए बिना आगे-पीछे देखे चल रही थी। अचानक उस फलों वाली लड़की के साथ उसकी टक्कर लग गई। फलों वाली टोकरी सड़क के किनारे

पड़े पत्थरों के ऊपर गिर गई। काफी केले और संतरे खराब हो गये।

लड़की खराब हुए फलों को देखकर रोने लग गई। उसका रोना स्वाभाविक था क्योंकि घर में उसकी बीमार माँ के सिवाय और कोई नहीं था। पिता का देहान्त हो चुका था। लड़की फल बेचकर माँ की दवाई और घर का खर्च चलाती थी। फल खराब होने से आज उसे आमदनी नहीं होगी। इसलिए माँ की दवाई नहीं आयेगी; खाना नहीं बनेगा। उसने सारी हालत उसे बता दी।

इलायजा घबरा गई। उसने भाई को कहा– चलो भाग चलें, नहीं तो लोग हमें पीटेंगे।

उसके भाई ने कहा– एक तो तुमने इस बेचारी के फल खराब किये, ऊपर से भागने को कहती हो। इसकी हुई हानि की तुम जिम्मेदार हो। इसे लेकर घर चलो, इसे खराब हुए फलों की कीमत देनी होगी। किसी गरीब की वैसे ही सहायता करनी चाहिये इसमें तो तुम्हारा कसूर है।

घर आकर उन्होंने माँ को सब कुछ बता दिया। माँ ने इलायजा को डांटा और कहा– अब तो मैं इस लड़की को फलों की कीमत दे देती हूँ और तुम्हारा जेबखर्च उतनी देर तक बंद रहेगा जितनी देर तक मेरे दिये पैसे पूरे नहीं होंगे।

बच्चों! क्या तुम उस दयालु बालक का नाम जानते हो, नहीं न! उस बालक का नाम नेपोलियन था जो बड़ा होकर फ्रांस का सम्राट बना। वह बहुत वीर और साहसी योद्धा था।

बोध कथा : कमल जैन

दुष्टों का साथ कभी अच्छा नहीं होता

काशी के एक राजा ने एक बिल्ली पाल रखी थी। वह बिल्ली से बेहद प्यार करता था। उसे भरपेट दूध मलाई और देसी घी के मिष्ठान खिलाया करता था। वह हमेशा मखमल के बिस्तरों पर लेटी रहती और कई बार प्यार से राजा की गोद में जाकर बैठ जाया करती। पूरे महल में वह आजाद पंछी की तरह घूमा करती।

एक दिन बिल्ली ने महल के शाही बगीचे में एक जहरीला सांप देखा। उसने सांप का पीछा किया। अंततः सांप को लगा कि अब उसकी मृत्यु निकट है। उसने ठहरकर बड़े प्रेम से कहा– बहन, बिल्ली! तुम मेरी जान बख्श दो क्योंकि तुम भी चूहे खाती हो और मैं भी चूहे खाता हूँ। हमारी एक समानता है। हाँ, यदि तुम मेरी जान बख्श दो तो मैं अपना एक गुप्त रहस्य तुम्हें बता दूंगा। जो तुम्हारे बहुत काम आयेगा।

गुप्त रहस्य का नाम सुनते ही बिल्ली के मस्तिष्क में बिजली कौंधी– यह जरूर कोई राज की बात बताएगा जो जीवन के सफर में उपयोगी हो सकती है।

बिल्ली ने प्यार से कहा– भैया, सांप! मैं तुम्हें नहीं मारूंगी। हाँ, तुम क्या गुप्त रहस्य बताने जा रहे हो? मेरे कान में फटाफट कह दो।

सांप ने उसके कान में धीरे से कुछ कहा और तेजी से रेंगता हुआ झाड़ियों में गायब हो गया।

गुप्त रहस्य की बात सुनते ही बिल्ली बड़े गर्व से फुदकते-फुदकते राजा के पास पहुँची। राजा ने उसे तुरन्त अपनी गोद में बैठा लिया। बिल्ली ने तुरन्त अपने पैर के नुकीले पंजे से राजा के हाथ में घाव कर दिया।

बिल्ली की इस हरकत से राजा को बड़ा गुस्सा आया। तभी राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने हँसते हुए कहा– सांप से शिक्षा लेने वाली बिल्ली यही काम कर सकती थी। आखिर संगत का भी तो असर होता ही है।

राजा को मंत्री को बात भली लगी। राजा ने तुरन्त अपने दो सिपाहियों को आदेश दिया– इस बिल्ली को एक सन्दूक में बन्द करके नदी में फेंक आओ।

जब सिपाही उस बिल्ली को नदी में फेंक आये तो बुद्धिमान मंत्री ने राजा से कहा– महाराज! दुष्ट का साथ सदा खराब होता है। दुष्ट की सीख भी खराब होती है, जिस पर उसकी छाया पड़ जाए, वह भी उसी रंग में बदल जाता है।

तब से राजा ने यह बात गले उतार ली– 'वास्तव में दुष्टों का साथ कभी अच्छा नहीं होता।'

प्रस्तुति : उदय ठाकुर

क्या आपको ज्ञात है?

❖ आलू सुदूर दक्षिणी अमेरिका की सब्जी है। वर्ष 1492 में पेरू से आलू विभिन्न देशों से होते हुए भारत आया है। भारत में सर्वप्रथम आलू मेजर यंग ने पहाड़ों की रानी मसूरी में 1815 में बोया था। प्रसिद्ध वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रेंकलिन आलू के बड़े शौकीन थे। कंद को संस्कृत में आलू कहते हैं। यूरोपवासी आलू को 'इड एपिल' कहते हैं।

❖ दुनिया में चाय चीन देश का उपहार है। ब्रि. टेन ने सर्वप्रथम वर्ष 1644 में चीन के जिमन नाम के स्थान से चाय आयात की थी। जिमनवासी चाय को 'टे' कहते थे। यही 'टे' बाद में 'टी' हो गई। चीन और जापान चाय को 'चा' कहते थे।

❖ लीची चीन की देन है। चीन के लाइचू नाम के स्थान से आने से इस फल का नाम लीची पड़ा। एक रोचक बात यह है कि चीन में एक लीची का दाना नीलामी में पाँच लाख पचपन हजार युआन प्राप्त हुई थी। यह लीची 400 वर्ष प्राचीन वृक्ष की थी जिसे मात्र वहाँ के राजा खाते थे।

❖ बासमती चावल को भारत के उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में लाने का श्रेय अफगानिस्तान के बादशाह दोस्त मोहम्मद खान को है। यह वर्ष

1839 का समय था। चावल के बीज सुरक्षित रखने के लिए खोखली बाँस में मिट्टी भर कर रखी जाती थी इसलिए इसका नाम बाँस-मिट्टी पड़ा था जो बाद में बासमती में प्रणित हो गया।

❖ गन्ना की खोज सर्वप्रथम यूनान के जंगल में आज से दो हजार वर्ष पूर्व एक आदिवासी ने की थी। ईसा के 800 वर्ष पूर्व गायना जाति के लोग गन्ने की खेती करते थे। उन्हीं के नाम में पहले गायना फिर गन्ना हुआ। भारत में गन्ने की खेती ईसा से 338 वर्ष पूर्व हुई थी। सिकन्दर गन्ने का बड़ा प्रेमी था।

❖ इतिहासकारों के अनुसार आज जो फली फ्रैंचबीन कहलाती है। वह 14वीं सदी में दक्षिण अमेरिका से यूरोप पहुँची थी। पोप क्लेमेंट सप्तम ने इन्हें अपनी भतीजी कैथरीन मैडिची को हैनरी द्वितीय के साथ विवाह के अवसर पर उपहार में दिया था। यह कहते हुए कि रंगीन बेशकीमती जवाहरातों से कम न समझो इनको। यह धारती के गर्भ से प्रकट होने वाले रत्नों के बराबर मूल्यवान है।

❖ तरबूज पहली बार अफ्रीका में पाया गया था और वहीं से यह सारी दुनिया में गया। एक अनुमान के मुताबिक इसे ईसा से 2000 वर्ष पूर्व नील नदी की घाटी में उगाया जाना शुरू हुआ। दुनियाभर में तरबूज की 1200 से अधिक किस्में पाई जाती हैं। इसका वजन 80 किलोग्राम तक हो सकता है।

❖ यूरोप के जंगलों से रसोईघर में आने वाली सब्जी टमाटर को पूर्व में लोग जहरीली समझकर नहीं खाते थे। एक दिन एक नौजवान ने हिम्मत कर एक टमाटर खाया। बस टमाटर प्रसिद्ध होकर दुनियाभर में चर्चित हो गया। चिली की राजधानी सेटियागो में टमाटर फेंक कर 'टोमाटिना' उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव की शुरुआत स्पेन से वर्ष 1945-50 के मध्य हुई थी।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

कुछ दिनों बाद गणेश की माँ की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई।
अपनी माँ के इलाज के लिए गणेश को अपनी जमीन साहूकार के पास गिरवी रखनी पड़ी।
सारे पैसे माँ के इलाज में खत्म हो गए। अब हमारा गुज़ारा कैसे होगा?
सुनो जी, क्यों ना हम कुछ नया काम शुरु करें।

कुछ ही दिनों में गणेश ने नया काम शुरू कर दिया। वह ठेले पर समोसे, कचौड़ी और चाय बेचने लगा।
गणेश की पत्नी, कचौड़ी और समोसे बनाकर उसे देती और गणेश ठेले पर ही चाय बनाता और बेचता।
स्वस्थ होने पर गणेश की माँ भी काम में हाथ बंटाने लगी। अब गणेश ने अपने ठेले में चीजों की संख्या बढ़ा दी।

कुछ समय बाद गणेश ने अपनी बचत से एक छोटी-सी दुकान खोल ली और वहीं अपने सामान को बेचने लगा।
अब गणेश, गणेश की माँ, और उसकी पत्नी बहुत खुश थे क्योंकि उनकी दुकान चल पड़ी थी।
कुछ दिनों बाद गणेश ने पूँजी जमा करके अपनी जमीन वापस छुड़ा ली।
गणेश को अपनी मेहनत का फल मिला। यदि गणेश मेहनत न करता तो वह कामयाब न होता।
शिक्षा : मेहनत करते जाओ उसका फल अवश्य मिलेगा।

प्रस्तुति : राधा नाचीज

पहेलियां

1. हरा हूँ पर पत्ता नहीं,
नकलची हूँ पर बन्दर नहीं,
बूझो तो मेरा नाम सही

2. सिर पर उसके देखा मटका,
मटके को घर लाकर पटका।
कुछ को खाया कुछ को फेंका,
मटके का पानी भी गटका।।

3. एक छोटा-सा फकीर,
उसके पेट पर लकीर।

4. काली हूँ मैं काली हूँ,
काले वन में रहती हूँ।
लाल पानी पीती हूँ,
बताओ मैं कौन हूँ?

5. काला मुँह लाल शरीर,
कागज़ को मैं खाता।
पर रोज मेरा पेट फाड़कर,
कोई उन्हें ले जाता।।

6. उसका घर फौलादी चादर,
जल के भीतर जल के बाहर।
संग हर जगह जाता है,
कभी छूट न पाता है।।

7. पैदा हुई जब तीस गज,
फेर घटी गज चार।
फिर जो घटती चली गई,
कैसी है वह नार।।

8. लाल लाल आँखें,
लम्बे लम्बे कान।
रूई का फुहासा,
बोलो क्या है मेरा नाम।।

9. रात गली में खड़ा-खड़ा,
डंडा लेकर बड़ा-बड़ा।
रहो जागते होशियार,
कहता है वो बार-बार।।

10. वो दौड़ा पटरी पर,
फिर उड़ जाएगा ऊपर।
बादल के प्यारे घर में,
दूर हवा के अन्दर में।।

11. हाथ में हरा, मुँह में लाल।
क्या चीज है, बताओ प्यारेलाल।।

12. औघट घाट घड़ा न डूबे,
हाथी खड़ा नहाए।
पीपल पेड़ फुनग तक डूबे,
चिड़िया प्यासी जाए।।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत

सदा बड़ों का आदर करना

कर्म से कभी न जी चुराना
सीख कहीं से भी तुम पाना,
आलस कर ना समय गंवाना
बीता समय कभी ना आना।

बड़ा कीमती एक-एक पल
जो खोया तो फिर पछताना,
मिथ्या भाषण कभी न करना
सत्य का साथ सदा निभाना।

सदा बड़ों का आदर करना
आज्ञा लेना शीश झुकाना,
कभी बुराई तुम मत करना
सत्य मार्ग पर कदम बढ़ाना।

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे जो होते हैं
आज्ञाकारी वो होते हैं,
मात-पिता का कहना माने
अच्छे बीज वही बोते हैं।

करते परिश्रम रात-दिन वो
व्यर्थ समय न कभी खोते हैं,
विनम्रता का बाना पहने
आदरभावी वो होते हैं।

करते सहायता सबकी वो
जो बड़े सहाई होते हैं,
नहीं किसी का करे अनादर
सबके ही प्यारे होते हैं।

प्रेरक-प्रसंग : नेहा गाबा

जैसा को तैसा

भैंस और घोड़े में लड़ाई हो गयी। दोनों एक ही जंगल में रहते थे। पास-पास चरते थे और एक ही रास्ते से जाकर एक ही झरने का पानी पीते थे। एक दिन दोनों लड़ पड़े। भैंस ने सींग मार-मारकर घोड़े को अधमरा कर दिया।

घोड़े ने जब देखा कि वह भैंस से जीत नहीं सकता, तब वह वहाँ से भागा। वह मनुष्य के पास पहुँचा। घोड़े ने उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

मनुष्य ने कहा– भैंस के बड़े-बड़े सींग हैं। वह बहुत बलवान है। मैं उससे कैसे जीत सकूंगा?

घोड़े ने समझाया– मेरी पीठ पर बैठ जाओ। एक मोटा डंडा ले लो। मैं जल्दी-जल्दी दौड़ता रहूंगा। तुम डंडे से मार-मारकर भैंस को अधमरा कर देना और फिर रस्सी से बांध लेना।

मनुष्य ने कहा– मैं उसे बांधकर भला क्या करूंगा?

घोड़े ने बताया– भैंस बड़ा मीठा दूध देती है। तुम उसे पी लिया करना।

मनुष्य ने घोड़े की बात मान ली। बेचारी भैंस जब पिटते-पिटते गिर पड़ी, तब मनुष्य ने उसे बांध लिया। घोड़े ने काम समाप्त होने पर कहा– अब मुझे छोड़ दो। मैं चरने जाऊंगा।

मनुष्य जोर-जोर से हँसने लगा। उसने कहा– मैं तुमको भी बांध देता हूँ। मैं नहीं जानता था कि तुम मेरे चढ़ने के काम आ सकते हो। मैं भैंस का दूध पीऊंगा और तुम्हारे ऊपर चढ़कर दौड़ा करूंगा। घोड़ा बहुत रोया। बहुत पछताया। अब क्या हो सकता था? उसने भैंस के साथ जैसा किया, वैसा फल उसे खुद ही भोगना पड़ा। ◆

ऐतिहासिक कहानी : श्यामसुन्दर गर्ग

वीर बालक दूधा

एक पन्द्रह वर्षीय मेवाड़ी भील बालक दूधा लोकगीत गुनगुनाता अरावली पर्वतमाला के जंगलों में अपनी गायों को चराकर घर की ओर चला जा रहा था। अचानक घोड़े की हिनहिनाहट से उसका ध्यान भंग हो गया। हिनहिनाहट आने की दिशा की ओर देखा तो पगडंडी से कुछ दूर एक चट्टान के समीप एक घोड़ा दिखाई दिया तथा पास ही राजसी परिधान में तेजस्वी आकृति को बैठे देखा। दूधा राजसी पुरुष के पास आ गया।

राजसी तेजस्वी चेहरे पर कई दिनों से भूख की मलिनता दूधा को दिखाई दे रही थी। दूधा ने गाँववासियों से सुना था कि महाराणा प्रताप मुगलों से मेवाड़ को आजाद कराने के लिए लड़ रहे हैं, वह जंगलों में भटक रहे हैं। दूधा को इस बात की प्रसन्नता थी कि महाराणा ने बादशाह की अधीनता स्वीकार नहीं की है। उसने महाराणा से पूछा, 'म्हारा महाराणा।' जवाब मौन स्वीकृति से सिर हिलाने से मिल चुका था।

दूधा ने पुनः प्रश्न किया– महाराणा, कांई था भूखा हो?

महाराणा मुस्कुराये तथा मौन स्वीकृति में एक बार फिर सिर हिला दिया।

दूधा अपने महाराणा को अधिक भूखा नहीं देख सकता था। वह तुरन्त ही दौड़ता हांफता हुआ अपने घर आया एवं खुद के लिए रखी रोटियां

कपड़े में बांध फिर से उसी गति से कुछ समय में वहाँ पहुँच गया। उसने रोटियां महाराणा को दी। महाराणा ने भील बालक द्वारा अपनेपन से लाई रोटियां प्रेमपूर्वक खाई। उस दिन के पश्चात् यह नित्य का कर्म हो गया।

दूधा गायों को जंगल में चराने ले जाते वक्त रोटियां लाता और महाराणा को खिला देता। एक दिन दो मुगल सैनिक गश्त कर रहे थे। दूधा को उन्होंने जंगल में जाते देखकर रोक लिया और रोटियों को देख पूछा कि कहाँ ले जा रहा है?

दूधा तुरन्त समझ गया कि ये सैनिक ऐसा क्यों पूछ रहे है? अतः दूधा ने जवाब दिया, म्हारी गायां रा डेरा (गौशाला) पर जा रह्या हूँ। ये म्हारी रोटियां हैं। मुगल सैनिकों ने उसे जाने दिया किन्तु कुछ क्षण बाद ही उन्हें शंका होने पर कि यह झूठ बोल रहा है उसे आवाज दे, पुनः बुलाया तो दूधा को यह भांपने में देर नहीं लगी कि सैनिकों को उस पर शक हो गया है। उसने पगडंडी छोड़ तीव्रगति से पहाड़ी चट्टानों पर चढ़ना शुरू कर दिया। दूधा को चट्टानी रास्ते दौड़ते हुए भागता हुआ देख एक मुगल सैनिक ने अपनी तलवार से निशाना साधा। दूधा की तरफ फेंकी, जिससे दूधा का हाथ कटकर अलग हो गया। जिसमें रोटियां थी। दूधा को तुरन्त ख्याल आया कि रोटियां नहीं पहुँची तो म्हारा महाराणा भूखा रह्वैला। उसने तुरन्त दूसरे हाथ से रोटियां उठाई तथा जंगल की ओर तीव्र गति से चल पड़ा।

मुगल सैनिक हतप्रभ हो देखता रह गया और यह सोचने को विवश हो गया कि यह बालक बलिदानी है, यह धरा धन्य है। हमारा बादशाह इसे कैसे अधीन रख सकता है।

महाराणा प्रताप जंगल में विचारमग्न बैठे थे। दूधा को इस हालत में देख सकते में आ गए। उन्होंने रक्त रंजित वीर बालक को छाती से लगा लिया। महाराणा की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। जो इस बात का प्रमाण थी कि 'म्हू भूखों मरू, म्हू प्यासो मरू, मेवाड़ धरा आजाद रहे।'

दूधा जैसा वीर बालक हो, वह मेवाड़ भला कैसे पराधीन रह सकता है।

प्रेरक-प्रसंग : नेहा नागपाल

लिंकन का दृढ़ संकल्प

लिंकन के किशोर अवस्था के दिनों की घटना है। वह बहुत निर्धन थे लेकिन उनके अन्दर आगे बढ़ने, कुछ कर गुजरने की बड़ी ललक थी, कठिन संकल्प था।

एक बार उन्हें पता चला कि नदी के दूसरी ओर ओगमोन नामक गाँव में एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। लिंकन कड़ाके की सर्दी के दिनों में उस बर्फीली नदी में नाव में बैठ गए। नाव वह स्वयं खे रहे थे। आधी नदी उन्होंने पार की होगी कि नाव एक बड़े बर्फ के टुकड़े से टकराकर क्षतिग्रस्त हो डूब गई। फिर भी साहस के धनी नौजवान लिंकन निराश नहीं हुए। उन्होंने बड़ी मुश्किल से तैरकर नदी पार की और जा पहुँचे रिटायर्ड जज के घर।

इत्तेफाक से उस समय जज का घरेलू नौकर भी नहीं था इसलिए लिंकन को जज के छोटे-मोटे काम भी करने पड़ते। वह जंगल से लकड़ियां बटोरकर लाते और घर में पानी भी भरकर लाते।

पारिश्रमिक के नाम पर उन्होंने सिर्फ एक ही इच्छा व्यक्त की कि वह जज की सारी किताबें पढ़ने भर को पा सके।

जज ने खुशी-खुशी उन्हें अपनी पुस्तकें पढ़ने का मौका दिया। संकल्प के धनी लिंकन आगे चलकर अमरीका के राष्ट्रीय जीवन में छाए रहे और देश के सर्वोच्च पद पर जा विराजे राष्ट्रपति के रूप में।

सच ही है, 'संकल्प हो तो आदमी क्या नहीं कर सकता।'

विशेष लेख : मीना

गुणकारी आम

सब्जीमंडी में फिर से आमों की बहार आने लगी है। भारत के हर कोने में आसानी से उपलब्ध आम का फल सेहत के लिए बेहद पौष्टिक होता है। आम का वृक्ष बारहों मास हरा रहता है। आम की फसल अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि देशों में भी होती है किन्तु भारत का आम सर्वाधिक उम्दा किस्म का माना जाता है। पका हुआ आम सेहत के लिए अच्छा साध्य है। यह शरीर के भार में वृद्धि करता है। आयुर्वेद में आम की काफी प्रशंसा की गई है। आयुर्वेद के मुताबिक आम मधुर, बलवर्द्धक, स्निग्ध, सुखदायक, हृदय को बल देने वाला, वातनाशक, पित्तनाशक, रसयुक्त और अग्निवर्द्धक होता है।

आम के वैज्ञानिक रासायनिक विश्लेषण के अनुसार इसमें जल 86 प्रतिशत, कार्बोज 12 प्रति., रेशा 1.1 प्रति. प्रोटीन, 0.60 प्रति, कैल्शियम 0.01 प्रति., फास्फोरस 0.02 प्रति., वसा 0.10 प्रति., खनिज लवण 0.3 प्रति., लोहा प्रति 100 ग्राम में 5 मिलीग्राम तत्व पाये जाते हैं। विटामिन 'ए', 'बी' और 'सी' भी आम में पाए जाते हैं।

आम मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं पहला देशी आम, जो चूसकर खाये जाते हैं और आकार में कुछ छोटे होते हैं। दूसरे, जिन्हें कलमी आम कहा जाता है। इन्हें चाकू से काटकर खाया जाता है। इन आमों की विभिन्न किस्में मालदा, बंबइया, लंगड़ा, सफेदा, दशहरी, हापुस, सरोली, फजली आदि होती हैं।

यदि शरीर में कोई घाव नहीं भर रहा हो तो आम खाने से वह शीघ्र भर जाता है। आम के नियमित सेवन से शरीर में रक्त की मात्रा में वृद्धि होती है। शरीर की थकावट दूर होती है। आम खाकर ऊपर से हल्का गर्म या ठंडा दूध पीना अत्यंत लाभदायक होता है। यह तत्काल ताकत देता है।

आम का फल श्रेष्ठ औषधि भी है। आइए, आम के कुछ रोग-निवारक गुण जानें–

❖ पके आम को गर्म राख में दबाकर भूनकर ठंडा होने पर चूसें। इससे सूखी खांसी ठीक हो जाती है।

❖ मीठे आम के आठ-दस चम्मच रस में दो चम्मच शहद मिलाकर पिया जाए तो वायु-रोगों में लाभ होता है।

❖ शरीर का कोई अंग आग से जल जाए तो आम के पत्ते की राख को पानी या घी में मिलाकर उस जगह पर लेप करना चाहिए। इससे तत्काल लाभ होगा।

❖ आम के कच्चे पत्ते दांतों की मजबूती बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसके लिए पत्तों को चबाकर दांत मांजने चाहिएं।

❖ लू लगने पर कच्चे आमों का पना बनाकर

मरीज को थोड़ा-थोड़ा करके पिलाना लाभप्रद होता है।

❖ नकसीर में आम की गुठली का रस नाक में टपकाना बहुत असरकारी होता है।

आम हर दृष्टि से स्वास्थ्यप्रद है। किन्तु इसके सेवन में कुछ सावधानी जरूरी है। आमों को खाने या चूसने से लगभग दो घंटे पहले तक पानी में भिगोये रखना चाहिये। खाने से पहले थोड़ा-सा रस निकालकर फेंक दें। जिस व्यक्ति में पित्त की अधिकता हो, उसे आम का सीमित सेवन करना चाहिए। गूदे वाले कलमी आमों को खाली पेट न खाएं। उन्हें भोजन के साथ या भोजन के पश्चात् खाएं। आमों के सेवन के बाद शरबत न पीएं। कच्चे दूध की लस्सी आम के सेवन के पश्चात् अत्यंत लाभदायक है। अधिक पके हुए आम तथा पिलपिले आम, जिनके रस में झाग हो नहीं खाएं यह लाभ के स्थान पर क्षति पहुँचा सकते हैं।

लालच का फल

एक था राजा। विवेकी और दयालु। प्रजा को प्राणों के समान प्यार करता था। देवता भी राजा से प्रसन्न थे। वे समय-समय पर राजा से मिलने आते रहते थे।

राजा में अनेक गुण थे किन्तु एक अवगुण भी था। राजा सभासदों और मंत्री की हर बात का विश्वास कर लेता था। कभी किसी के कहने पर शंका नहीं करता था।

एक बार तीन देवता राजा के दरबार में आए। शाम होने को थी। दरबार से राजा उठने ही वाला था। तभी द्वारपाल ने देवताओं के आने की खबर दी। सुनकर राजा स्वयं स्वागत के लिए आया। झुककर प्रणाम किया। फिर आदर के साथ उन्हें सिंहासन पर बैठाया।

देवताओं ने राजा से कुशल-मंगल पूछा। राजा ने कहा– देव, आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। राज्य में सभी जगह सुख-शान्ति है।

देवता मुस्कुराकर बोले– तुम धन्य हो। तुमने जनकल्याण के कार्य किये। पानी के तालाब, धर्मशालाएं और पाठशालाएं भी बनवाईं। हम तुमसे प्रसन्न है। बताओ, तुम्हारा क्या हित करें?

–देवगण, मेरा सबसे बड़ा हित यही है कि आप मुझे सही रास्ता दिखाएं। कोई गलती हो तो उसे सुधारें। मैं आपकी शरण में हूँ। आज रात आप मेरे अतिथि बनें।

देवताओं ने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली। राजा ने राजपुरोहित को बुलवाया और कहा– देवों को अतिथिशाला में ले जाओ। इनकी रुचि के अनुकूल भोजन बनवाओ। देखो, देवों के आतिथ्य में कोई कमी न रहने पाए।

राजपुरोहित देवताओं को अतिथिशाला में ले आया। उसने उनकी खूब सेवा की। देर रात तक उनके चरण दबाता रहा। अपनी अच्छाइयों का बखान भी करता रहा।

सुबह हुई। देवताओं ने कहा– राजपुरोहित जी, तुम्हारी सेवा से हम प्रसन्न हैं। कोई वरदान मांग लो।

वह तो यही सोच ही रहा था। देवताओं के गले में अद्भुत फूलों की मालाएं थीं। उनसे

फैली सुगंध से सारी अतिथिशाला महक रही थी। राजपुरोहित ने कहा– देवगण, आपकी मालाएं बहुत सुन्दर हैं। ऐसी सुगंध वाले फूल इस धरती पर नहीं हैं।

–तुम ठीक ही कहते हो। ये स्वर्ग के फूल हैं। इन मालाओं में अद्‌भुत शक्ति है। जो पहन ले, कभी किसी से पराजित नहीं हो सकता। उसकी हर इच्छा पूरी हो जाती है। उस पर बुढ़ापे का असर भी नहीं होता है।

यह सुनकर राजपुरोहित सोचने लगा– क्यों न वरदान में ये मालाएं ही मांग लूं।

देवताओं ने फिर पूछा– बोलो, क्या चाहते हो?

राजपुरोहित बोला– यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी मालाएं दे दीजिए।

देवता कुछ देर चुप रहे। फिर उनमें से एक देवता बोले– मेरी माला वही ले सकता है जिसके मन में कभी लालच न आया हो।

–मैं इस योग्य हूँ। आप देख रहे हैं, मेरा जीवन त्याग भरा है। जरा भी लालच नहीं है। माला मुझे दे दीजिए।

देवता ने अपनी माला राजपुरोहित को दे दी।

दूसरे देवता ने कहा– मैं भी अपनी माला तुम्हें देना चाहता हूँ। मगर यह माला वही पहन सकता है जिसने जीवन में कभी झूठ न बोला हो।

–मैं अपने मुँह से अपनी बड़ाई कैसे करूं। झूठ क्या होता है, मैं जानता भी नहीं।– राजपुरोहित ने कहा।

–तब मेरी माला भी पहन लो।– मुस्कुराते हुए देवता ने उसे अपनी माला दे दी।

राजपुरोहित ने ललचाई निगाहों से तीसरे देवता

की ओर देखा। वह बोले– जो अपने कर्तव्य का सही ढंग से पालन करता हो, किसी को धोखा न देता हो, वही मेरी माला पहनने का अधिकारी है।

–देव, मैं कृतार्थ हुआ। मेरे विषय में राजा ने आपको सब कुछ बता दिया है। मेरा रास्ता धर्म का है। दूसरों को कर्तव्य का पाठ पढ़ाना ही मेरा काम है। मैं इस माला का भी अधिकारी हूँ।

और तीसरे देवता ने भी अपनी माला राजपुरोहित को दे दी।

मालाएं पहनकर राजपुरोहित गर्व से फूला न समाया। उसी समय राजा का रथ आ गया। देवता राजमहल की ओर चल पड़े।

वे राजा के पास पहुँचे ही थे कि एक सेवक दौड़ता हुआ आया। वह बोला– महाराज, रक्षा कीजिए। राजपुरोहित का दम घुट रहा है। वह मरने ही वाला है।

–क्यों क्या हुआ? अभी तो देवगण उसी के पास से आ रहे हैं।– राजा ने आश्चर्य से पूछा।

महाराज, लगता है राजपुरोहित से कोई गलती हो गई है। देवताओं ने अपनी मालाएं उसे दी थीं। पहनते ही वे छोटी होने लगीं और अब मालाओं के फूल लोहे की जंजीर जैसे सख्त होकर गर्दन में फंसे हैं। बचाइए, वरना राजपुरोहित मर जाएंगे।– सेवक ने कहा।

राजा ने आश्चर्य से देवताओं की ओर देखा। देवता बोले– राजन्, राजपुरोहित अपने किये की सजा भोग रहा है। वह लालची है, झूठा है। तुम्हें और सारी प्रजा को भी ठगता होगा। उसने हमसे भी झूठ बोला। लालच के वश हो हमारी सेवा की। झूठ बोलकर मालाएं लीं।– कहते हुए देवताओं ने पूरी घटना राजा को बता दी।

अभी बातें हो ही रही थीं कि सेवक रथ में बैठाकर राजपुरोहित को ले आए। उसका गला घुट रहा था। आंखें बाहर को निकलने लगी थीं। मुश्किल से बोल पा रहा था।

राजपुरोहित रथ से उतरकर देवताओं के चरणों पर गिर पड़ा किसी तरह बोला– मुझे क्षमा करें देव! मैंने जो कुछ कहा था, सचमुच मैं वह नहीं हूँ।– कहते हुए उसकी आँखों में आंसू बहने लगे।

देवताओं ने आगे बढ़कर मालाओं को छुआ तो वे फिर पहले जैसी हो गई। राजपुरोहित ने तुरन्त उन्हें उतारा। वापस करते हुए बोला– मैं इन्हें पहनने के योग्य नहीं हूँ।

देवताओं ने मालाएं हाथों में ले ली। राजा से बोले– तुम्हारे दरबार में कोई इन्हें पहनने का दावा करता है।

सब चुप। सबने अपना-अपना हृदय टटोला। सभी के अन्दर बुराई निकली। देवता हँसकर बोले– देखा राजन्! प्रजा तुम्हें प्यार करती है इसलिए कुछ नहीं बोलती। तुम जिन लोगों पर विश्वास करते हो वे सब तुम्हें धोखा देते हैं।

राजा को विश्वास तो करना चाहिए, मगर अन्धविश्वास नहीं। उसे सभी के काम की पूरी तरह देखभाल करनी चाहिए। यही सही रास्ता है।

राजा का सारा घमण्ड चूर हो गया। वह बोला– आपने ठीक ही कहा है। मैं भी अपने को कम महान नहीं मानता था जबकि राजा तो प्रजा का सेवक है। आपने गलती बताकर मेरी आंखें खोल दीं।

देवताओं ने मालाएं राजा को सौंप दीं और कहा– इन्हें रखो। जब तक तुम कर्तव्य का पालन करते रहोगे, तब तक ये इसी तरह ताजा रहकर महकती रहेंगी।

बाल कविता : सुमेश निषाद

सूरज ने खूब रोब जमाया

सूरज को जब गुस्सा आया।
उसने सबको आँख दिखाया।
गर्मी बढ़ी पसीना टपके,
सूरज ने खूब रोब जमाया।

गर्मी में आलस आता है।
पढ़ना भी नहीं भाता है।
पंखा चलता जाता लेकिन,
गर्मी को न हरा पाता है।

ताल तलैइया सूखे सारे।
पशु पक्षी प्यासे बेचारे।
कैसे प्यास बुझायें अपनी,
सोच सोच हैरान हैं सारे।

मीठी लस्सी मन को भाती।
आइसक्रीम भी खूब सुहाती।
ठंडा पानी प्यास बुझाता,
पीकर गर्मी छू हो जाती।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

लू ने कैसी धूम मचाई

मौसम ने फिर ली अंगड़ाई,
गरमी आई, गरमी आई।

सूरज दादा आँख दिखाते,
आग-बबूला होते जाते।
लू ने कैसी धूम मचाई,
गरमी आई, गरमी आई।।

कुछ ठंडे को मन ललचाये,
लस्सी, लेमन राहत लाये।
आईसक्रीम की बन आई,
गरमी आई, गरमी आई।।

आलस्य अपना जाल बिछाये,
पढ़ना-लिखना अब न भाये।
कूलर से कुछ राहत पाई,
गरमी आई, गरमी आई।।

सूख रहे हैं ताल-तलैइया,
पक्षी भी व्याकुल हैं भैया।
बादल मामा करो चढ़ाई,
गरमी आई, गरमी आई।।

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : चलती बस से उतरते समय तुम आगे की ओर क्यों गिर पड़ते हो?

उत्तर : जब तुम बस में बैठकर यात्रा कर रहे होते हो तो तुम्हारा शरीर भी बस की गति के साथ-साथ गति अवस्था में रहता है। चलती बस से उतरते समय जब तुम अपने पांव नीचे जमीन पर रखते हो तो तुम्हारा निचला भाग विराम अवस्था में आ जाता है अर्थात् स्थिर हो जाता है। दूसरी ओर तुम्हारे शरीर का ऊपरी भाग गति अवस्था में ही बना रहता है। बस, इसी वजह से तुम आगे की ओर गिर पड़ते हो।

प्रश्न : बर्फ को बोरी या बुरादे में क्यों रखते हैं?

उत्तर : बोरी और बुरादे में तमाम छिद्र होते हैं और उन छिद्रों में वायु भरी होती है। यह तो तुम जानते हो कि वायु ऊष्मा की कुचालक रहती है जो बाहर की ऊष्मा को अन्दर बर्फ तक आने से रोकती है। फलस्वरूप, बर्फ पिघल नहीं पाती है। बस, यही वजह है कि बर्फ को बोरी या बुरादे में ही रखा जाता है।

प्रश्न : रेगिस्तान में दिन के समय गर्मी और रात्रि को ठंड क्यों होती है?

उत्तर : रेगिस्तान में रेत की अधिकता रहती है। रेत ऊष्मा का अच्छा अवशोषक है। अत: दिन के समय सूर्य की ऊष्मा को अवशोषित करके रेगिस्तान गर्म हो जाते हैं और वहाँ गर्मी रहती है। रेगिस्तान विकिरण द्वारा अपनी ऊष्मा को निकालकर रात्रि में ठंडे हो जाते हैं जिससे रात्रि को वहाँ ठंड रहती है।

प्रश्न : चिड़ियां सर्दियों में अपने पंख क्यों फैलाए रखती हैं?

उत्तर : जब सर्दियां शुरू होती हैं तो चिड़ियां अक्सर अपने पंख फैलाए हुए देखी जाती हैं। जानते हो वे ऐसा क्यों करती हैं? जब चिड़ियां पंख फैलाकर बैठती हैं तो उनके शरीर और पंखों के बीच में हवा की परत आ जाती है। चूंकि हवा ऊष्मा की कुचालक है जो चिड़ियों के शरीर की ऊष्मा को बाहर जाने से रोकती है। इस प्रकार चिड़ियां सर्दी के कुप्रभाव से स्वयं को बचाने में सक्षम हो जाती हैं।

डेसीमीटर

एक कमरे में विज्ञान से संबंधित कुछ उपकरण रखे हुए थे। वे एक-दूसरे के बहुत करीब थे। अतएव उनमें परस्पर विज्ञान-वार्ता शुरू हो गयी।

पहले थर्मामीटर बोला, ''मैं किसी मनुष्य के शरीर का तापक्रम आसानी से बता सकता हूँ।''

''दूध का घनत्व बताने की क्षमता मुझमें है,'' यह लैक्टोमीटर की आवाज थी। वह आगे बोला, ''यही नहीं, उसकी शुद्धता-अशुद्धता की परख भी मुझे है।''

अब बैरोमीटर की बारी आयी। उसने भी झट कहा, ''किसी भी स्थान पर हवा का क्या दबाव है, मुझसे पूछो। तुरंत बता दूंगा।''

तभी तीनों की बातें सुनकर कमरे के एक कोने में पड़ा लकड़ी का बना एक नन्हा-सा पैमाना अपने को रोक नहीं सका। वह भी टपक पड़ा, ''अरे, आप तीनों एक-दूसरे से कितनी दूरी पर हो, यह बताना मेरा काम है।''

''तुम हो कौन?'' तीनों की निगाहें एकाएक उस पैमाने की ओर दौड़ गयी।

अपनी नन्हीं आवाज में वह झट बोला, ''मैं हूँ- डेसीमीटर।''

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

लेख : परशुराम शुक्ल

नेटरजैक टोड

नेटरजैक टोड (Naterjack Toad) यूरोप का टोड है और यूरोप के बाहर कहीं नहीं पाया जाता। यूरोप में यह फ्रांस और स्पेन में बहुतायत से मिलता है। इसके साथ ही यह स्वीडन, पोलैंड, इंग्लैंड, आयरलैंड तथा स्कॉटलैंड आदि देशों में पाया जाता है। नेटरजैक टोड ऐसे रेतीले स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करता है जहाँ सरलता से मांद बनाई जा सके। सागरतट के रेतीले टीलों पर रहना इसे विशेष रूप से पसन्द है। इसका निश्चित क्षेत्र बताना अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि यह अचानक बहुत बड़ी संख्या में उन स्थानों पर प्रकट हो जाता है जहाँ पहले कभी नहीं देखा गया था। इसी तरह यह अपने क्षेत्र से गायब भी हो जाता है और नये क्षेत्रों में चला जाता है।

नेटरजैक मांद में रहने वाला टोड है। यह नम और रेतीली जमीन पर कुछ ही सेकेंड में मांद बना लेता है और देखते ही देखते अदृश्य हो जाता है। नेटरजैक अपने पीछे के पैरों से तेजी से जमीन खोदता है और शरीर के पिछले भाग से ही मांद में घुसता है। जमीन के कठोर होने पर यह अपने आगे के पैरों से मिट्टी में छेद करता है। यह जमीन खोदता जाता है और मिट्टी पेट के नीचे फेंकता जाता है। यह अन्य जीवों द्वारा छोड़ी गई मांदों का उपयोग भी करता है।

नेटरजैक मेढक के समान शीतकालीन निद्रा लेता है। सर्दियों में यह लगभग तीस सेंटीमीटर या इससे भी अधिक गहरी मांद तैयार करता है और

उसी के भीतर चला जाता है तथा मांद का मुँह बन्द कर लेता है।

नेटरजैक की शारीरिक संरचना सामान्य टोड की तरह होती है किन्तु यह सामान्य टोड से कुछ छोटा होता है। इसकी लम्बाई लगभग आठ सेंटीमीटर होती है तथा नर और मादा के आकार में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। नेटरजैक की पीठ तथा ऊपर के भाग का रंग फीका पीलापन लिये हुए कत्थई होता है और पेट तथा नीचे के भाग का रंग पीलापन लिये हुए सफेद होता है। इस पर गहरे रंग के धब्बे और मस्से होते हैं। कभी-कभी इसकी पीठ पर भी कत्थई, लाल, पीले अथवा हरे रंग के धब्बे देखने को मिल जाते हैं। इसके चारों पैर अन्य टोडों की तुलना में छोटे होते हैं और इन पर काले रंग के पट्टे होते हैं। नर टोड के आगे के पैर छोटे होते हुए भी बहुत मजबूत होते हैं जो इसे कठोर जमीन पर मांद बनाने में मदद करते हैं। नेटरजैक टोड अपने पीछे के पैरों के छोटे होने के कारण न तो उचक पाता है और न ही छलांगें लगा सकता है किन्तु यह बड़ी तेजी से दौड़ लगा सकता है। इसलिए कुछ लोग इसे 'धावक टोड' भी कहते हैं। नेटरजैक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके थूथुन से लेकर पीछे अन्त तक पीले रंग की एक सुनहरी रेखा पाई जाती है जो विश्व के किसी भी टोड में देखने को नहीं मिलती। यही कारण है कि यूरोप के अनेक भागों में इसे सुनहरी पीठ वाले टोड के नाम से जाना जाता है।

नेटरजैक का प्रमुख भोजन छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, मकड़ियां, कृमि तथा घोंघे आदि हैं। यह अपने शिकार को छलांग लगाकर नहीं पकड़ सकता। अतः यह पहले शिकार का पीछा करता है और फिर उसे दौड़कर दबोच लेता है।

मादा नेटरजैक टोड लड़ियों के रूप में चार हजार तक अंडे देती है। इसके अंडों की लड़ियां डेढ़ मीटर से दो मीटर तक लम्बी होती हैं। इसके अंडे बहुत छोटे होते हैं तथा इनका व्यास लगभग दो मिलीमीटर होता है।

नेटरजैक के अंडे 5 दिन से 10 दिन के मध्य फूटते हैं और इनसे बहुत छोटे-छोटे टेडपोल निकलते हैं। इनका रंग कालापन लिये हुए ग्रे होता है तथा शरीर पर पीले रंग के धब्बे होते हैं। टेडपोल का विकास तीव्र गति से होता है और कुछ ही समय में यह ढाई सेंटीमीटर का हो जाता है। इसके बाद टेडपोल कायान्तरण करता है और छोटा-सा बच्चा टोड के रूप में आ जाता है। इस समय इसकी लम्बाई एक सेंटीमीटर से भी कम होती है। नेटरजैक का बच्चा अंडे से बाहर निकलने के बाद 5 से 8 सप्ताह तक पानी के भीतर रहता है और इसके बाद बच्चा टोड बनते ही पानी के बाहर आ जाता है तथा स्वतंत्र जीवन आरम्भ कर देता है।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

बुरी आदतों का परिणाम

चंपकवन में रहने वाला बंटी बंदर बहुत ही शरारती था। जंगल के सभी जानवर उसकी शरारतों से इतने तंग आ चुके थे कि ज्योंही उन्हें बंटी अपने घर की तरफ आता दिखाई देता, वे अपने दरवाजे बंद कर लेते। उन्हें पता था कि बंटी अंदर आकर बिना मतलब हर चीज छेड़ेगा

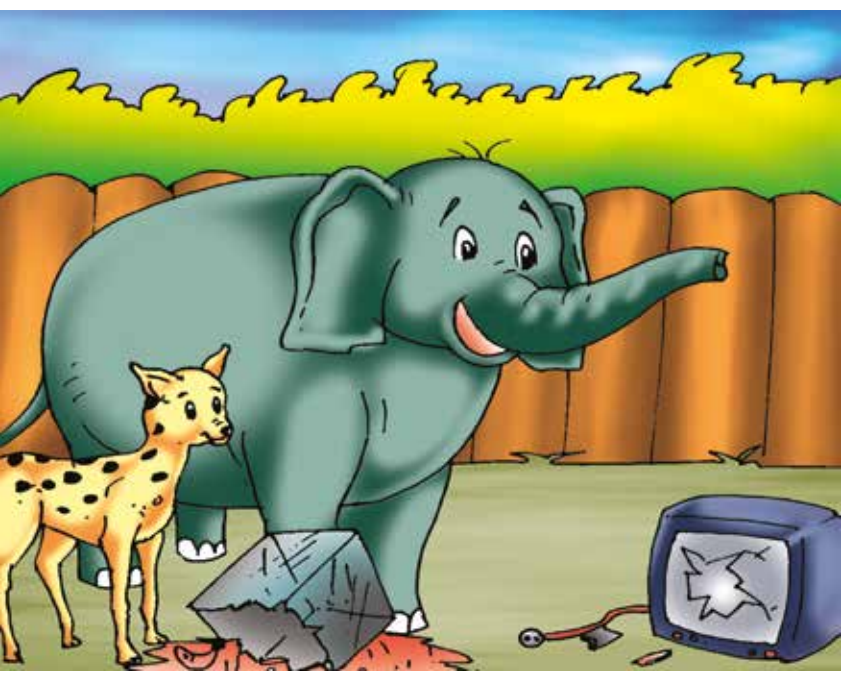

और कुछ न कुछ जरूर तोड़ जायेगा। सड़क पर आने-जाने वाले यदि कोई खाने-पीने की चीजें ले जाते तो बंटी झपट्टा मारकर भाग जाता।

बंटी की करतूतों से जंगल के सभी जानवर परेशान हो उठे थे। पड़ोसी भीमा हाथी का टीवी, रोमी भालू का पंखा और हीरामन हिरण का सुनहरी मछलियों वाला कांच का सुन्दर 'एक्वेरियम' (मछलीघर) भी बंटी ने तोड़-फोड़ डाला था। ये बड़ी कीमती चीजें थीं। उसने छोटी चीजों का नुकसान किया उनकी तो कोई गिनती ही नहीं थी। एकाध बुरी आदत हो तो कोई बर्दाश्त भी कर ले, पर बंटी बंदर में तो सभी बुरी आदतें थीं।

चंपकवन के स्कूल में जंगल के छोटे-छोटे बच्चे पढ़ते थे। वे भी बंटी की हरकतों से परेशान थे। बंटी ने सोचा, क्यों न जंगल के स्कूल के इन छोटे-छोटे जानवरों से दोस्ती की जाये। ये बच्चे दोपहर के भोजन के लिए लंच बॉक्स तो लाते ही हैं। बस फिर क्या, मेरा काम बन जायेगा।

वह स्कूल के मैदान में पीपल के पेड़ पर बैठकर छात्रों को आकर्षित करने का प्रयास करने लगा, पर बच्चों ने उसकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वे उसकी आदतों से परेशान थे।

बंटी मन ही मन बड़बड़ाया, धत् तेरी की, कम्बख्तों ने मेरा इरादा भांप लिया लगता है। यहाँ भी मेरी तरकीब काम नहीं आई। वह उदास हो गया। तभी उसका साथी शंटी बंदर उछलता-कूदता वहाँ आ गया। आते ही उसने पूछा– क्यों भाई, मुँह क्यों लटका रखा है?

–बात ऐसी नहीं है, लगता है अब भूखे मरने के दिन आ गये हैं, जो भी तरकीब सोचता हूँ काम नहीं आती है।– बंटी ने कहा।

–मेरे होते हुए तू भूखा मरेगा? ठहर, मैं

तरकीब बताता हूँ। पर पहले वादा कर हम दोनों साथ-साथ ही रहेंगे।– शंटी ने कहा।

फिर शंटी ने बंटी के कान में कुछ कहा जिसे सुनकर उसकी आँखों में चमक आ गई। उछलता हुआ बंटी बोला– यह हुई न बात! चलो आज ही इस तरकीब को आजमाते हैं।

शंटी बंदर ने स्कूल के छोटे-छोटे जानवरों से दोस्ती कर ली। उनको इस बात का भरोसा दिलाया कि परीक्षा में बंटी तुम लोगों की मदद करेगा। वह परीक्षा के समय तुम्हारी सहायता

करेगा। तुम्हें मुफ्त में पढ़ायेगा और टीचर जी से बोलकर तुम्हें पास करवायेगा। यह सुनकर फिसड्डी छात्र खुशी से उछल पड़े।

सभी जानवर अब बंटी व शंटी के लिए खाना भी लाने लगे। अब उनके सामने पेट भरने की समस्या नहीं रही। बंटी और शंटी ने अब लूटमार करना भी शुरू कर दिया था। जंगल के छोटे जानवर जो कुछ लेकर जाते दिखाई देते तो वे उसे डरा-धमकाकर लूट लेते। छोटी-छोटी वारदातें करते-करते उनका हौंसला बढ़ गया था।

एक दिन रोमी लोमड़ी बन-ठनकर, चश्मा लगाकर जंगल के बाजार से खरीददारी करने निकली तो दोनों बंदर भी उसके पीछे लग गये। रोमी उनके इरादे भांप गई थी, उसने मन ही मन कहा– बेटो, तुम्हारा पाला आज लोमड़ी मौसी से पड़ा है। आज तुम्हें छठी का दूध न याद दिला दिया तो मुझे लोमड़ी मत कहना।

यह सोचकर वह 'सुपर मार्केट' चली गयी। सामान खरीदा, पर्स खोलकर बिल का भुगतान किया और सामान का बैग लिये निकली। ज्योंही वह कुछ दूर गई होगी कि बंटी-शंटी बंदर सामने आ गये। उन्होंने रोमी लोमड़ी का रास्ता रोकते हुए कहा– मौसी, तुम्हारे पर्स में जितनी भी नगदी है, वह हमारे हवाले कर दो।

मुस्कुराते हुए रोमी लोमड़ी ने कहा– खाली पर्स लेकर तुम क्या करोगे? तुमने मुझे मौसी कहा

है तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करूँगी। यह बताओ कि तुम्हें कितने रुपयों की जरूरत है। संकोच मत करो, बेझिझक बताओ! तुम्हारी मौसी मौके पर तुम्हारे काम नहीं आई तो कौन आयेगा?

बंटी और शंटी लोमड़ी की मीठी-मीठी बातों में आ गये। बंटी बोला– मौसी, हमें केवल पांच सौ रुपये चाहिए।

–बेटे, मेरे इस पर्स में तो सौ-पचास रुपये ही होंगे, तुम पहले मिल जाते तो मैं खरीददारी नहीं करती। अब मैंने तुमसे वादा किया है तो इंतजाम करना ही पड़ेगा। तुम लोग यहीं ठहरो। मैं दुकानदार को सामान वापस देकर रुपये लेकर आती हूँ।– कहकर रोमी लोमड़ी 'सुपर मार्केट' में वापस चली गई।

रोमी ने दुकानदार को सारी बात बताई तो उसने तुरन्त जंगल के पुलिस थाने में सूचना दे दी। बंटी और शंटी तो प्रसन्न होते हुए लोमड़ी मौसी का इन्तजार कर रहे थे। वह तो नहीं आई पर जंगल का थानेदार चीतासिंह अपने सिपाहियों के साथ आ पहुँचा। पुलिस को देखकर दोनों भागने लगे तो सिपाहियों ने उन्हें धर दबोचा और थाने में ले जाकर बन्द कर दिया।

इधर जंगल के विद्यालय के बच्चे चिन्तित थे। परीक्षा होने में कुछ ही समय बचा था और बंटी-शंटी कई दिनों से दिखाई नहीं दे रहे थे। फिसड्डी छात्रों को तो दिन में तारे दिखाई देने लगे थे।

जब छात्रों ने बंटी व शंटी की तलाश की तो पता चला कि वे जंगल के थाने में कैद थे।

तब जंगल विद्यालय में पढ़ने वाले टोनी बकरे ने अपने मित्रों से कहा– नाहक ही हम बंटी-शंटी की बातों में आ गये थे। हमने पढ़ाई में ध्यान नहीं दिया, यही हमारी भूल थी।

रॉकी हिरण ने समझाते हुए कहा– अभी भी समय है, सफलता मेहनत करने से मिलती है। चलो देर आए, दुरुस्त आए, जागो तभी सवेरा, अभी भी समय है, रात-दिन एक कर परीक्षा में पास होना है।

बंटी-शंटी को अपनी बुरी आदतों की सजा मिल चुकी है।

जंपी जिराफ, जोरु शेर, गुज्जु हाथी, गबरू भालू, मोंटी बकरी, शक्ति घोड़ा, हरियल गैंडे आदि सभी छात्रों ने रॉकी हिरण की बात का समर्थन किया। सभी जानवर परीक्षा की तैयारी में लग गये।

◆◆◆

बाल गीत :
अशोक 'आनन'

आम रसीला

मधुमास में फूले आम।
फूलों का है मंजरी नाम।

झड़कर मंजरी, आती केरी।
खाने में न करते देरी।

पककर रंग हो जाता पीला।
फलों का राजा आम रसीला।

खाते सब लेकर चटकारे।
पेड़ों पर लटके लगे प्यारे।

छोटे-बड़े और बड़े स्वाद।
ग्रीष्म ऋतु में आते याद।

खाने को मन हरदम चाहे।
मौसम इनका कभी न जाए।

कविता : देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पपीता स्वादिष्ट व गुणकारी...

पपीता होता स्वादिष्ट व गुणकारी,
स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी।
कच्चे पर हरा दिखे, पके पर पीला,
इसे खाने से दूर हो, कई बीमारी।।

पके पपीते बच्चे को पसंद आएं,
मीठा लगते इसीलिए खूब खाएं।
कच्चे फल की सब्जी भी बनती,
इसमें विटामिन प्रोटीन पाए जाएं।।

कैल्शियम व आयरन इसमें मिले,
उदर विकार में, यह फायदा करे।
कई प्रदेशों में अलग-अलग नाम,
पाचन सही रखे, मोटापा दूर करे।।

पपीता भूख और शक्ति को बढ़ाए,
यह खाने पर आसानी से पच जाए।
पपीता घर के आसपास हम लगाएं,
गुणों से युक्त उत्तम फल कहलाए।।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार

मैं तो बाहर चली। मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है। बॉय मम्मी मैं जा रही हूँ।
क्यों ना मैं किसी स्विमिंग पूल के पास जाऊँ? वहाँ तो पानी भी होगा और ठंडक भी।
अरे! यहाँ तो बहुत अच्छा लग रहा है क्यों न मैं मोंटू, मौली और चिंटू को भी यहाँ बुला लूँ? मैं अभी फ़ोन करती हूँ।

क्या तुम लोग भी स्वीमिंग पुल के पास आना चाहोगे। यहाँ बहुत ठंडक है।
हाँ! हम लोग भी वहाँ आते हैं। हम सब मिलकर बहुत मज़े करेंगे और गर्मी का पूरा लुत्फ उठाएँगे।
किट्टी! हम सब आ गए।
अरे! यहाँ तो सच में बहुत अच्छा लग रहा है।
क्यों न! हम सब मिलकर बॉल खेले?
हाँ! हाँ!! क्यों नहीं!

अरे! बॉल तो पानी में गई। अब कैसे निकलेगी?
अरे! इसमें परेशान होने वाली क्या बात है। मुझे स्विमिंग आती है। मैं निकाल सकती हूँ।
ये लो बॉल आ गई।
अरे वाह! किट्टी तुम तो बहुत होशियार हो।
इसमें होशियार वाली क्या बात है। हमें समय रहते सब काम आने चाहिए। हमें कभी भी किसी भी काम की जरूरत पड़ सकती है।
अब हम भी स्विमिंग सीखेंगे।
हाँ! हाँ! क्यों नहीं?
क्या तुम सब कोल्डड्रिंक पीओगे?
किट्टी! आज तो सच में बहुत मज़ा आ गया। हम सब गर्मी के दिनों में भी इतना मज़ा कर सकते हैं। यह कभी सोचा न था।

कभी न भूलो

❖ ब्रह्म के स्वरूप का प्रेम जिन्होंने पा लिया फिर किसी का डर नहीं लगता।
– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

❖ ज्ञान गहरे सागर के समान है। – हरदयाल

❖ मानव को अपनी मानवता स्थिर रखने में सदा सावधान व दक्ष रहना चाहिए। – नाथ जी

❖ सम्पूर्ण विश्व ही परमात्मा का महामन्दिर है।
– वियोगी हरि

❖ ईमानदार आदमी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।
– एलेक्जेंडर पोप

❖ नकल करके आज तक कोई महान नहीं बन सका। – जॉनसन

❖ क्रोध सदैव मूर्खता से शुरू होता है तथा पश्चाताप पर समाप्त।

❖ मनुष्य जिससे भय खाता है उससे प्रेम नहीं करता। – अरस्तु

❖ जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है न शोक करता है वह भक्त परमात्मा को अधिक प्रिय है। – वेदव्यास

❖ केवल निष्पक्ष और ईमानदार लोगों के काम मधुर सुगंध देते हैं और फूल के समान खिलते हैं। – शर्ले

❖ झूठ नहीं बोलने का गुण ग्रहण कर लेने से अन्य किसी धर्म कर्म की आवश्यकता नहीं रह जाती। – तिरुवल्लुवर

❖ अन्दर हमेशा सच्चाई, सादगी व खुशी रखो। फिर देखो जीवन में कितना आनन्द मिलता है।

❖ आज का जो कार्य करना है उसे हम आज ही करेंगे तो समझो हम बुद्धिमान हैं।

❖ दूसरों को भला-बुरा कहने से पहले जरा हम अपने-आपको अच्छी तरह से समझ लें कि हम कितने भले और अच्छे हैं।

❖ अच्छी पुस्तकें जीवन्त पढ़ने से तत्काल प्रकाश (ज्ञान) और उल्लास (आनन्द) मिलता है।

❖ सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

❖ असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

❖ बिना ईमानदारी के जीवन के किसी भी क्षेत्र में कामयाब नहीं हो सकते।

❖ झूठे बहाने नुकसानदेह साबित होते हैं।

❖ विश्वास और सच्ची लगन से कार्य करने पर अवश्य सफलता मिलती है।

❖ प्रगतिशील विचारधारा वाले लोगों की संगत करें।

❖ अगर आप प्रयास करेंगे तो विश्वास मानिये एक दिन आपको सफलता अवश्य मिलेगी।
– अज्ञात

बाल कविता : उदय मेघवाल

बया पंछी

बया पंछी बड़ा ही प्यारा,
दूर दूर तक जाता।
अपना सुन्दर नीड़ बनाने,
तिनके चुनकर लाता।।

लालटेन सा नीड़ पेड़ पर,
हरदम रहता लटका।
वर्षा आँधी या आतप हो,
नहीं किसी का खटका।।

नन्हा सा यह बया सयाना,
बुनकर भी कहलाता।
मेहनत और लगन से अपना,
अनुपम नीड़ बनाता।।

बया घोंसला बुनता रहता,
गीत खुशी के गाता।
जीवट से जीवन जीने की,
सबको सीख सिखाता।।

बाल कविता : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

कोयल

कोयल काली होती लेकिन, मधुरस घोले बोल।
उसकी मधुमय वाणी समझो, सचमुच है अनमोल।

जब-जब मधु ऋतु आती तब-तब, कोयल गाती गीत।
अपनी मीठी वाणी से वह, दिल लेती है जीत।

मीठी वाणी की महिमा का, पाठ हमें समझाती।
जब भी बोलो मधुरस घोलो, बात यही बतलाती।

रंग रूप की नहीं सदा ही, गुण की होती पूजा।
कोयल जैसा मीठा बोले, और नहीं है दूजा।

हम भी संकल्प आज लें, मीठा ही बोलेंगे।
सुनने वालों के कानों में, मिसरी सी घोलेंगे।

- बीजगणित, त्रिकोणमिति और फलन की उत्पत्ति भारत में हुई।
- भारत ने ही विश्व को शून्य दिया था।
- पेनिसिलिन की खोज सर्वप्रथम 'अलेक्जेंडर फ्लेमिंग' ने की।
- विश्व का सबसे ऊँचा क्रिकेट ग्राउंड चैल हिमाचल प्रदेश में है। इसे 1893 में पहाड़ों की चोटियों को समतल करके बनाया गया। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 2444 मीटर है।
- भारत में विश्व में सबसे ज्यादा डाकघर हैं।
- शतरंज का आविष्कार भारत में हुआ।
- प्राचीन भारत में विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना 700 ई.पू. में की गई।
- साइबेरिया की बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी झील है।
- जिराफ जीभ से अपने कान साफ कर सकता है।
- दो जेब्रा की धारियां कभी एक समान नहीं हो सकती। यानि सभी जेब्रा पर धारियों में भिन्नता मिलेगी।
- हरे फलों को पकाने के लिए 'एथिलीन गैस' प्रयुक्त की जाती है।
- डालफिन मनुष्य की भाषा की नकल कर सकती है।
- हाथी की सूंड में 40,000 पेशियां होती हैं।
- घोड़ा खड़े-खड़े भी सो सकता है।
- मधुमक्खियों को एक किलो शहद बनाने के लिए 40,00000 फूलों से रस चूसना पड़ता है।
- 'वाटरलू' का युद्ध 1815 में लड़ा गया था।
- ऊँट की औसत आयु लगभग बीस-बाईस वर्ष होती है।
- भारत की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल थी।
- कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष श्रीमती एनीबेसेंट थी।
- हमारे शरीर में कुल 650 मांसपेशियां होती हैं।
- कोशिका की खोज 'रॉबर्ट हुक' ने की।
- 'माइटोकॉण्ड्रिया' का कार्य कोशिकाओं को ऊर्जा प्रदान करना है।
- शरीर एवं शरीर के अंगों को ढ़कने वाले ऊतक का नाम 'एपिथीलियम ऊतक' है।

संग्रहकर्ता : किरण बाला

कहानी : जितेन्द्र मिश्र

माँ की सीख

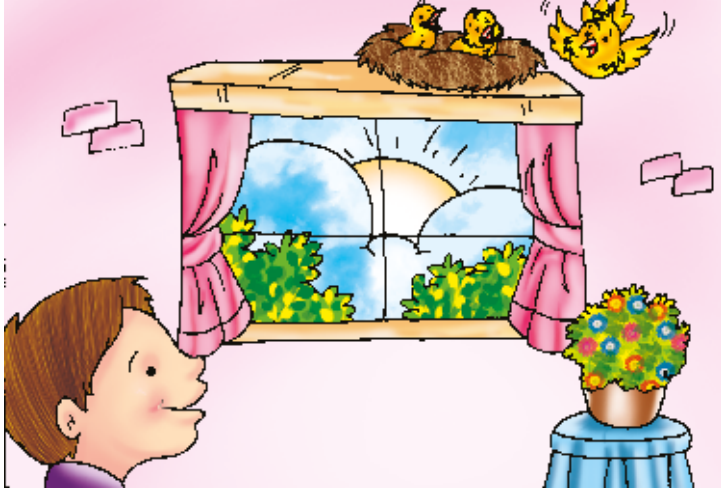

जरा-सी छूट मिली नहीं कि सोनू लग गया शरारत करने। सभी तो समझाकर हार चुके थे लेकिन सोनू था कि चिकना घड़ा। पानी डाला तो फिर ज्यों का त्यों। आज तो हद हो गयी। सुबह नाश्ते के बाद पापा तो ऑफिस चले गये और दीदी स्कूल। सोनू की छुट्टी थी; वह और मम्मी घर में। मम्मी रसोई में काम कर रही थी और सोनू शरारत करने की कोई युक्ति सोच रहा था।

अचानक उसकी निगाह खिड़की के ऊपर बने चिड़िया के घोसले पर पड़ी, वह खुशी से उछल पड़ा। सामने खिड़की पर चिड़िया बैठी थी। शायद थकी थी, सुस्ताने के बाद अपने घर जाने की सोच रही थी। अभी सोनू ने पत्थर का टुकड़ा उठाया ही था कि चिड़िया उड़कर घोसले में घुस गई।

चिड़िया के बच्चे अपनी माँ को देखकर चीं-चीं-चीं कर शोर मचाने लगे अब तो सोनू और भी खुश हुआ। 'चलो आज इसी से अपना मनोरंजन करूँगा।' कहकर सोनू चिड़िया के जाने का इन्तजार करने लगा। थोड़ी ही देर बाद चिड़िया खाने की तलाश में बाहर निकली। अब तो सुनहरा मौका था सोनू के हाथ। उसने तुरन्त कुर्सी के ऊपर खड़े होकर घोसले में हाथ डाला तो चिड़िया के बच्चे भयभीत होकर शोर मचाने लगे।

चीं-चीं-चीं। हमें मत पकड़ो। हमें मत मारो। शायद अपनी भाषा में यही कह रहे थे। लेकिन इन सब बातों से बेखबर सोनू अपने काम में लगा था। उसने धीरे से हल्के हाथों से बच्चों को घोसले से बाहर निकाला और उनको टेबल पर बैठाकर थोड़ा-सा दूध कटोरे में लाकर रखा। लेकिन बच्चे तो थे डरे हुए। उन्होंने दूध की ओर देखा तक नहीं।

अब तो सोनू को बहुत गुस्सा आया। उसने डंडे की सहायता से घोसले को तोड़ डाला। शुक्र था ईश्वर का कि और बच्चे नहीं थे घोसले में नहीं तो वे भी सोनू के गुस्से की भेंट चढ़ जाते। बच्चों का शोर फिर भी कम नहीं हुआ तो सोनू ने उनको पिंजरे में बन्द कर दिया।

थोड़ी देर बाद चिड़िया खाना लेकर आई। घोसले को न देखकर अपने बच्चों को इधर-उधर ढूंढ़ने लगी। तुरन्त ही उसकी नजर पिंजरे में बन्द बच्चों पर पड़ी। बच्चों को सकुशल देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह उड़कर पिंजरे के इर्द-गिर्द मंडराने लगी और बोली– चीं-चीं-चीं यह सब कैसे हुआ? चीं-चीं-चीं अपना घर कैसे टूटा। मुझे बताओ मेरे बच्चों तुम ठीक तो हो न।

–चीं-चीं-चीं हम बिल्कुल ठीक हैं माँ। एक शैतान लड़के ने हमें यहाँ बन्द कर दिया

और हमारा घर भी उसी ने तोड़ डाला। पता नहीं क्यों?– कहकर बच्चे चुप हो गये।

दूर खड़ा सोनू मम्मी के साथ चिड़ियों के शोर को सुन रहा था। उसे बहुत मजा आ रहा था। वह मम्मी से बोला– मम्मी अब मैं इन बच्चों को पालूँगा और जब ये बड़े होंगे तो इनके पैरों में डोर बाँधकर इन्हें पतंगों की तरह उड़ाऊँगा– कहकर सोनू ताली बजाकर हँसने लगा।

–यह तो बहुत गन्दी बात है सोनू कि एक तो तूने बेचारे निरीह जीव का घर तोड़ा; फिर इस पर भी तुझे चैन नहीं मिला तो बच्चों के साथ यह बर्ताव। अगर तुम्हारे साथ भी कहीं ऐसा हो तो मेरे दिल पर क्या गुजरेगी। शायद यह तुम नहीं जानते।– मम्मी ने सोनू को समझाते हुए कहा– बेटा अपने मनोरंजन के लिये किसी भी जीव को सताना कहीं की मानवता नहीं है सच्चा इन्सान वही है जो सदैव दूसरों के सुख-दुख में काम आये।

सोनू मम्मी की बातों को ध्यान से सुन रहा था। उसे लगा कि मम्मी ठीक कह रही है उसे याद आया अभी हाल ही की तो बात है। जब मुझे तेज बुखार आया था तो मम्मी ने सारी रात जागकर किस तरह मेरी देखभाल की, सचमुच माँ अपने बच्चों को कभी परेशानी में नहीं देख सकती। एकटक सोनू ने उदास बैठी चिड़िया की ओर देखा तो उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

सोनू को अहसास हुआ कि सचमुच उससे बहुत बड़ी गलती हुई। मम्मी से उसने अपने किये की जाकर माफी माँगी और फिर चिड़िया के बच्चों को पिंजरे से आजाद कर दिया।

चिड़िया भी अपने बच्चों को खुला देखकर शोर मचाने लगी और बच्चों से जाकर लिपटकर रोने लगी। यह देखकर सोनू की आँखों में भी आँसू आ गये। उसने उसी समय प्रण किया कि वह अब कभी भी ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे किसी को भी परेशानी का सामना करना पड़े। ◆

कुछ बातें 'फादर्स डे' पर

- 'फादर्स डे' जून के तीसरे रविवार को आता है।
- फादर्स डे की अवधारणा सोनोरा स्मार्ट होड नाम की एक महिला ने प्रस्तुत की।
- पहली बार फादर्स डे 1910 में मनाया गया था।
- अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने फादर्स डे को मान्यता दी थी।

जानकारीपूर्ण आलेख : दिनेश दर्पण

सीमेण्ट की जन्मकथा

सेंटकवोंटिन में जोजेफ मोनियर नाम एक व्यक्ति रहता था। वह पेशे से माली था। जोजेफ मोनियर को कभी-कभी पागलपन सवार हो जाया करता था। वह उस पागलपन की अवस्था में अपने बगीचे के गमलों को उठा-उठाकर फेंक देता था, जिससे वे टूट जाते थे।

उसने एक दिन सोचा कि यदि वह ऐसे गमले बनवा ले जिन्हें पटकने पर भी उन्हें कोई नुकसान न पहुँचे। यदि ऐसा हो जाए तो कितना अच्छा रह. ेगा। बस यह विचार मन में आने पर उसने अपने इस विचार पर काम करना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने मिट्टी के साधारण गमले बनाए, मगर वे टूट गये। फिर उसने मोटे-मोटे गमले बनाये, तो वे बहुत भारी हो गये। फिर उसने कंकरीट का उपयोग किया लेकिन बात फिर भी नहीं बनी, मगर इस बार उसने गमले के चारों ओर मोटे-मोटे तार लपेट दिये। मगर कुछ ही दिनों बाद उन तारों में जंग लग गई और वे बेकार हो गये। मगर जोजेफ ने अब भी हार नहीं मानी और वह अपने उद्देश्य के लिए लगातार प्रयत्न में लगा रहा।

आखिर एक दिन सोचते-सोचते उसने यह निर्णय किया कि लोहे के तारों का एक गमला बनाया जाये और उस पर कंकरीट चढ़ा दी जाए।

जोजेफ मोनियर का यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ। इस प्रकार से तैयार किया गया गमला सबसे अधिक मजबूत अधिक प्रमाणित हुआ। जोजेफ के इस पागलपन के कारण जिस चीज का आविष्कार हुआ उसे रेनफोर्स्ड कंकरीट कहा जाता है। रेनफोर्स्ड कंकरीट के आविष्कार के कारण ही गगनचुंबी भवनों, सड़कों, पुलों आदि का निर्माण सम्भव हो सका।

पहेलियों के उत्तर :

1. तोता, 2. नारियल, 3. गेहूँ, 4. जूं, 5. लैटर बॉक्स, 6. कछुआ, 7. परछाई, 8. खरगोश, 9. चौकीदार, 10. हवाई जहाज, 11. पान, 12. ओस।

पढ़ो और हँसो

एक यात्री : (दूसरे यात्री से) भाई साहब! ट्रेन समय पर तो आ रही है न?

दूसरा यात्री : जी नहीं, बिल्कुल नहीं। ट्रेन पटरी पर आ रही है।

एक चोर रात में बांकेलाल के घर में घुस गया और उसके सामने पिस्तौल तानकर बोला– बताओ, सोना कहाँ है?

बांकेलाल बोला– भाई, आज घर में कोई नहीं है। सारा घर खाली है जहाँ मर्जी हो वहाँ सो जाओ।

शिक्षक : (सोनू से) गाय पर तुमने जो निबन्ध लिखा है। वह तुम्हारे भाई के निबन्ध जैसा है। क्या तुमने उसकी नकल की है?

सोनू : नहीं सर! दरअसल हमारे एक ही गाय है।

दीपक : अरे भई तुमने तालाब में डूबते बच्चे को बचाया और फिर बाहर निकालकर उसे मारा क्यों?

टिंकू : जब वहाँ सामने लिखा था कि तैरना मना है तो फिर वह तैरने क्यों गया?

पापा : (सोनू से) तुम्हें गणित में कितने नम्बर मिले ?

सोनू : जी मोनू से 10 नम्बर कम।

पापा : मोनू को कितने नम्बर मिले?

सोनू : जी दस।

अधिकारी : (मजदूर से) क्यों भाई रामू, दूसरे मजदूर दो-दो बैग ले जा रहे हैं। आखिर तुम ही क्यों एक बैग लेकर जा रहे हो?

मजदूर : साहब! वे मजदूर आलसी हैं। दो-बार चक्कर लगाने से वे डरते हैं।

गोलू : मम्मी दुध पीना है।

मम्मी : बेटा दूधा तो फट गया।

गोलू : मम्मी को सूई डोरे से सिल दो।

– प्रतीक्षा कुशवाह (इटावा)

बेटा : पापा-पापा! अगर चाँद पर आबादी हो गई तो क्या होगा?

पापा : बेटा, होगा क्या...? चाँद पर रहने वाले जो भी कूड़ा-करकट वहाँ से फेंकेगे, वो सीध हमारे ऊपर आकर गिरेगा।

अंग्रेजी भी बड़ी अजीब भाषा है 'सी एच' से 'च' बोलते हैं तो कभी 'क' बोला जाता है।

इसी प्रकार हमारे एक दोस्त मेडिकल कॉलेज में किसी से मिलने गये तो उन्होंने वहाँ ड्यूटी दे रहे चोपड़ा नामक डॉक्टर से पूछा– डॉक्टर साहब... ये 'चैमिस्ट्री' डिपार्टमेंट किधर है?

डॉक्टर बोले– भई 'चैमिस्ट्री' नहीं बल्कि 'कैमिस्ट्री' बोलते हैं यानी सी एच-'क'। समझ गये।

वह बोला– समझ गया डॉक्टर साहब, बिल्कुल समझ गया।

–क्या समझे?

–यही कि आप चोपड़ा नहीं बल्कि कोपड़ा हैं।

मालिक : (ड्राइवर से) तुम अचानक कार इतनी तेजी से क्यों चलाने लगे?

ड्राइवर : सर! गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया है, इसके पहले कि कुछ हो हम जल्दी से घर पहुँच जाते हैं।

निर्मला : (गीता से) क्या बात है मटर-पनीर में पनीर नजर नहीं आ रहा है?

गीता : अरे तुमने कभी गुलाब जामुन में गुलाब देखा है क्या?

– मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

केशर उपासना से बोला– जाओ आईना लेकर आओ मैंने अपना चेहरा देखना है।

उपासना खाली हाथ लौटकर बोली– केशर किसी भी दर्पण में आपका चेहरा नहीं दिखाई दिया। मैंने देखा सबमें मेरा ही चेहरा था।

भिखारी : सेठ, मुझे कुछ दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।

सेठ : तेरे पास 100 का छुट्टा है?

भिखारी : हाँ है न।

सेठ : तो पहले वे खचे ले।

मोहन 'ब्लड' के विषय में एक किताब पढ़ रहा था।

सोहन : (मोहन से) आज यह किताब क्यों पढ़ रहे हो?

मोहन : डॉक्टर ने कहा है कि कल मेरा 'ब्लड टैस्ट' है। इसलिए टैस्ट की तैयारी कर रहा हूँ।

सब्जीवाला बार-बार पालक पर पानी डाल रहा था।

एक आदमी काफी देर से उसे देख रहा था। वह पास आकर सब्जीवाले से बोला– जब पालक को होश आ जाए तो आधा किलो दे देना।

डॉक्टर ने मरीज से पूछा– कहिए, अब रात को नींद आ जाती है ना?

मरीज बोला– जी डॉक्टर साहब, लेकिन आधी रात तक यही सोचता रहता हूँ कि पहले नींद क्यों नहीं आती थी।

– आनन्द प्रकाश शर्मा (रिठाल)

जानकारी (लेख) : डॉ. विनोद गुप्ता

कबूतर को कैसे होता है दिशा ज्ञान

कबूतरों के दिशा ज्ञान को लेकर वैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन और परीक्षण किए हैं। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि वे पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के माध्यम से अपनी दिशा का ज्ञान कर लेते हैं। उनका यही दिशा ज्ञान उन्हें लंबी दूरी की यात्रा करने तथा वहाँ से सकुशल लौटने में मददगार होता है।

आधुनिक शोधों से पता चलता है कि कबूतर जब समूह में उड़ते हैं तो उनका नेतृत्व उन्हीं में से कोई एक अनुभवी कबूतर करता है। वह सबसे आगे चलता है और शेष सभी उसके पीछे।

प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के शोधार्थी ने कबूतरों के समूह पर लगातार नजर रखी और पाया कि वहाँ सब कुछ बड़ी व्यवस्थित तथा तरतीब से चलता है। उनका तालमेल बड़ा गजब का होता है।

एक अन्य अध्ययन में बुजपेस्ट की एक यूनिवर्सिटी में कुछ कबूतरों पर जीपीएस यंत्र लगाकर छोड़ा गया तो उनमें से एक ही कबूतर टीम का बार-बार नेतृत्व कर रहा था। स्पष्ट है कि अनुभवी या जानकार कबूतर ही उड़ान की दिशा तय करता है। इसे तय करते समय उसका अनुभव काम आता है। इसके अलावा नेतृत्व करने वाला कबूतर अन्य साथियों को जिम्मेदारी का बटवारा भी कर देता है। मसलन कहाँ रूकना है, कहाँ खाना मिलेगा आदि। इन सबसे कबूतरों को लंबी उड़ान भरने में कोई परेशानी नहीं होती।

कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि सूर्य की सहायता से ये अपना मार्ग ढूंढ लेते हैं। ये सूर्य की स्थिति में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर दिशा पहचान लेते हैं। वे सभी दिशाओं में दूर-दूर तक देख सकते हैं। यही दृष्टि उड़ान में उनकी मदद करती है।

कबूतरों की उड़ान कई बातों पर निर्भर करती है। जैसे जलवायु, वायु का प्रवाह आदि। ठंडी जलवायु में ये अधिक क्षमता से उड़ते हैं लेकिन गर्म जलवायु में जल्दी थक जाते हैं।

ये अपने मूल स्थान को कभी नहीं भूलते। यदि किसी एक कबूतर को उसके घर से लकड़ी के संदूक में बंद करके सैकड़ों मील दूर आजाद छोड़ दिया जाए तो थोड़ी देर वह आसमान में चक्कर काटेगा तथा फिर अपने मूल स्थान की दिशा में पलट जाएगा तथा घर लौट आएगा।

जब संचार के साधन नहीं थे, तब कबूतर ही एकमात्र संदेशवाहक था। सेना में प्रशिक्षित कबूतरों का एक दल भी होता था जो जरूरी संदेश पहुँचाता था। द्वितीय महायुद्ध में तो सेनाओं द्वारा अपने गुप्त संदेश कबूतरों द्वारा ही नियंत्रण कक्ष तक पहुँचाए जाते थे। वाटरलू की लड़ाई जीतने का समाचार भी सर्वप्रथम कबूतर द्वारा ही दिया गया था। अब से कोई दो हजार वर्ष पहले रोम में सेना कबूतरों से गुप्तचरी का काम लेती थी। फ्रांस के विद्रोह के दौरान भी संदेश पहुँचाने में कबूतरों ने काफी मदद की थी। बर्लिन और ब्रुसेल्स के बीच तो इसने टेलीग्राम तक पहुँचाए थे।

कविता : गोपेन्द्र सिन्हा

आसमान में निकले तारे

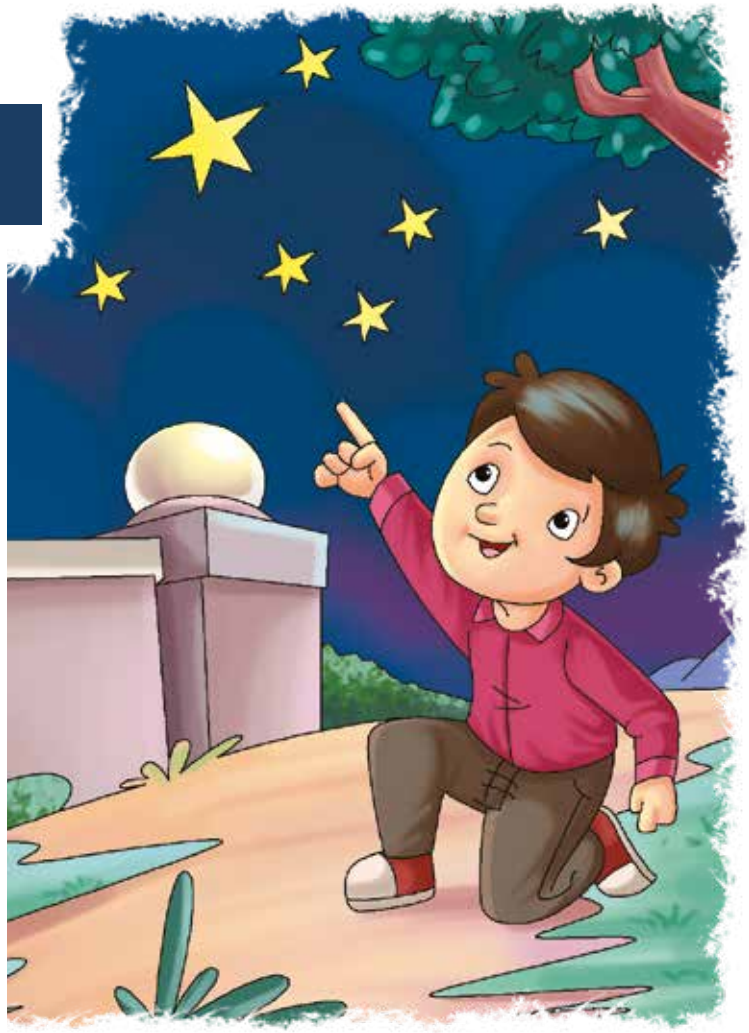

आसमान में निकले तारे,
बहुत सुंदर और खूब प्यारे।

आसमान में रहते छितराये,
सबके मन को खूब ये भाएं।

एक साथ निकलते कई हजार,
मानो सजा हो मीना बाजार।

दिन ढलते ही चले आते हैं,
रात खत्म कहीं छुप जाते हैं।

कुछ लाल-पीले, कुछ बुझे हुए,
दिखते हैं आसमान में गूथे हुए।

बादलों से करते लुकाछिपी,
पर इनका आना न रूकता कभी।

सबके मन को ये खूब लुभाते,
इन्हें देख बच्चे हर्षित हो जाते।

कविता : राजेश निषाद

गाँव का किसान

गाँव का किसान।
अन्न दाता किसान।
श्रम पर करता मान।
किसान देश की शान।

किसान चलाता हल।
उगाता है फसल।
आलू गोभी फल।
मेहनत इसकी सफल।

मिट्टी नरम बनाता।
खरपतवार हटाता।
बीज डालता जाता।
पानी भी पहुँचाता।

किसान उगाता अन्न।
स्वस्थ इसका तन।
सुन्दर इसका मन।
सबको देता भोजन।

मार्च अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **पार्थ टकरानी** — 12 वर्ष
   नानक नगर, निमवाड़ी कैम्प,
   अकोला (महाराष्ट्र)

2. **हिमांशु सिंह** — 12 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : सरया,
   जिला : देवरिया (यू.पी.)

3. **मानसी देवी** — 11 वर्ष
   बीइसपुर, पोस्ट : अर्निया,
   जिला : जम्मू (जम्मू व कश्मीर)

4. **पूजा सोनी** — 12 वर्ष
   एफ-157, गली नं. 82,
   महावीर एंक्लेव-3, न्यू दिल्ली

5. **अक्षरा सिंह** — 8 वर्ष
   6, पुराना कटरा रोड, बाला जी
   राजस्थान मिष्ठान भंडार के पास,
   प्रयागराज (यू.पी.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

अंबर लाम्बा (वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली), तुषार (सिविल लाइन्स, पलवल), सुजाता कुमारी (पंजाला, कांगड़ा) मानवी बंसल (मेन बाजार, लहरागागा), हितेश खुराना (शास्त्री नगर, फरीदाबाद), गगनप्रीत कौर (हांडीखेड़ा, अम्बाला), अद्विक खन्ना (अम्बाला कैंट), स्वर्णजीत (आदर्श नगर, फगवाड़ा), विधिता (सेक्टर-18 ए, द्वारका, दिल्ली), कौशिकी (बिलासपुर), गोविंद (दीप नगर, जालंधर), इश्मित जैन (सेक्टर-19 सी, चंडीगढ़)।

जून अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 जुलाई** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **सितम्बर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

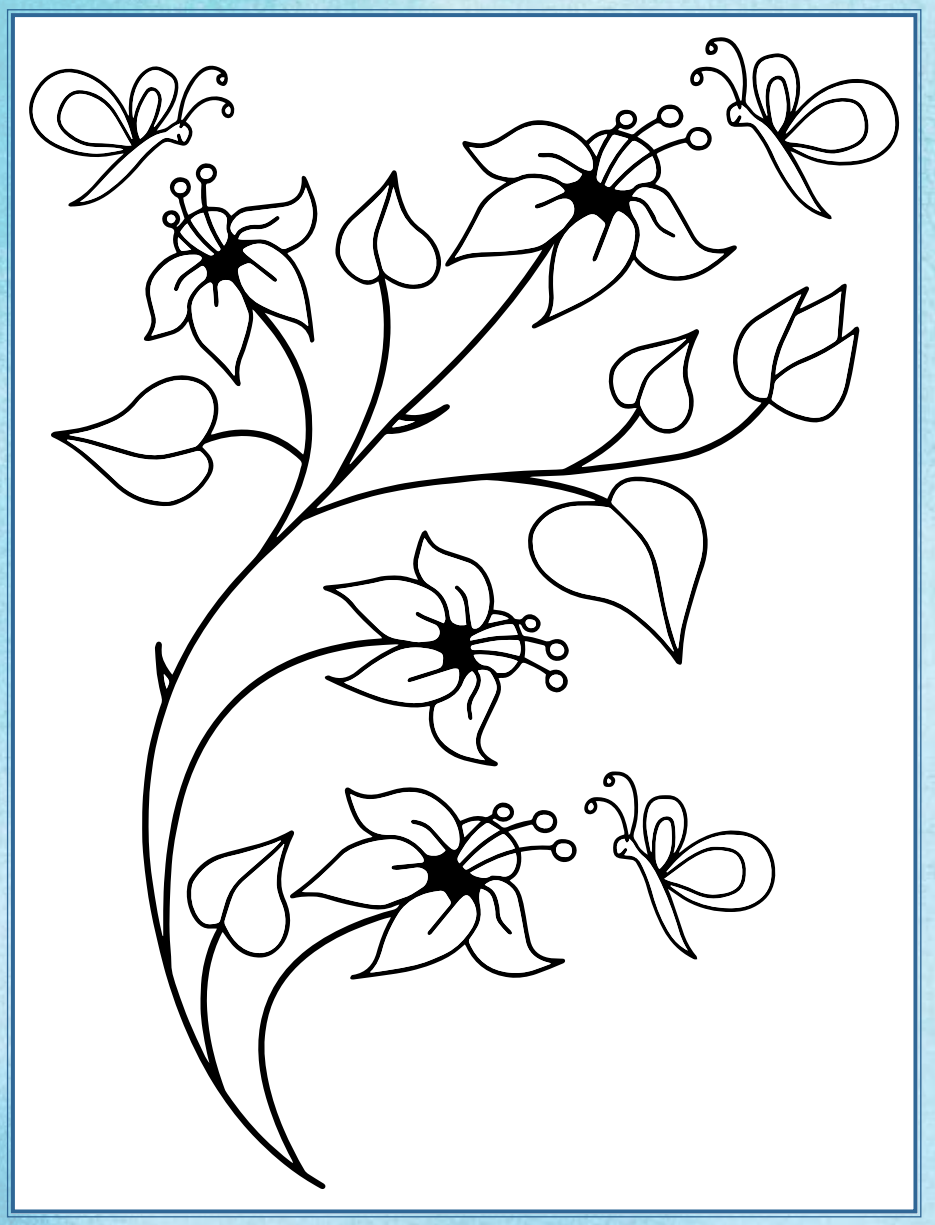

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मार्च अंक पढ़ने को मिला। पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई। इस अंक में प्रकाशित कहानियां, कविताएं शिक्षाप्रद थीं। स्तम्भों में 'अनमोल वचन' एवं 'कभी न भूलो' बहुत ही ज्ञानवर्द्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

– सौरभ कुमार (माधौगंज, हरदोई)

हँसती दुनिया हमारे पूरे परिवार के मन को भा गई है। हमारे गाँववाले भी इसे पसन्द करते हैं। सभी लोग हँसती दुनिया पढ़ने हमारे पास आते हैं। यह पत्रिका बहुत अच्छी है।

– विनोद कुमार (अमरपुर, बिलासपुर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया से कहानियां और कविताएं पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाता हूँ। मेरे दोस्त हँसती दुनिया का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। अप्रैल अंक मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई।

– अतुल गोपाल (रामनगर, दरभंगा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हर माह इस पत्रिका का इन्तजार रहता है। यह काफी ज्ञानपूर्ण पत्रिका है। मैं इसे पिछले कई वर्षों से इसे पढ़ता आ रहा हूँ। इसमें आए बदलाव काफी अच्छे हैं। 'पढ़ो और हँसो' एवं 'अनमोल वचन' काफी अच्छे लगते हैं।

– गुरमीत सिंह टुटेजा (इन्दौर)

हँसती दुनिया का मार्च माह का अंक बेहतरीन कहानियों का रंग-बिरंगा तोहफा था। प्रेरक-प्रसंग 'समय का पाठ' हमें समय के प्रति चेतन व सजग रहने की प्रेरणा देता है।

लेख 'भोजन के आवश्यक घटक' में अच्छी जानकारी दी गई है। – विरेश कश्यप (रुद्रपुर)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। जैसे ही नया महीना आने को होता है तो मेरी निगाहें दरवाजे पर टिकी रहती है कि अभी डाकिया आया और हमारी हँसती दुनिया लाया।

इसमें कहानियों के साथ-साथ 'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो' आदि शिक्षाप्रद हैं। हर महीने का अंक अति सुन्दर आता है। परमपिता-परमात्मा की हँसती दुनिया परिवार पर हमेशा कृपा बनी रहे। यह हँसती दुनिया दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– गुलशन आहूजा (पिहोवा)

अप्रैल अंक मिला। 'सबसे पहले' ने हमें यह बताया है कि 'अच्छा मित्र ही अच्छा मानव' और 'अच्छा मानव ही अच्छा मित्र' हो सकता है। इस बार की चित्रकथा ने संदेश दिया कि नकल में भी योग्यता और अक्ल की जरूरत होती है। 'कर्त्तव्य बोध' कविता हमें बहुत शिक्षाप्रद लगी।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के सदस्य हैं। यह पत्रिका हमारी जिन्दगी का तब से हिस्सा है। जब मैं और मेरी बहन बहुत छोटे थे। तब मुझे याद है मेरे पापा ने हमें इस पत्रिका को पढ़ने के लिए दिया था। मैंने बड़े चाव से पत्रिका की एक-एक कहानी को पढ़कर सुनाया तो तभी से पापा ने इस पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर ली थी।

– श्रुति अरोड़ा (मलेरकोटला)

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सद्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें :-

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

-सुलेख 'साथी'

प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।